नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
राधा-कृष्ण की मनोरम छवि
माटी मटाल का प्रदेश : उड़ीसा
कोरिया की कविताएं
विक्रमादित्य और बेताल
अगस्त '९५
छह
रुप

पारले
अब पारले पॉपिन्स का मज़ा चलता जाए...
भले ही पैकेट खत्म हो जाए
पारले पॉपिन्स के रैपर भेजिए, धमाकेदार उपहार पाइए.
मुफ्त : पारले पॉपिन्स के 20 रैपर भेजने पर शरारत भरा पज़ल किट. पारले पॉपिन्स के 10 रैपर भेजने पर फ़न पेड और जंगल बुक स्टिकर.
पारले पॉपिन्स के 4 रेपर भेजने पर जंगल बुक स्टिकर.
* पॉपिन्स इस भेंट के बिना भी मिलता है.
PARLE
POPPINS
अब फलों के नए-नए स्वाद में
फ्रूट जूस या पल्प रहित,
अतिरिक्त फ्लेवर सहित.
जल्दी करो
उपहार बहुत कम हैं.
डाक टिकट लगे लिफाफे पर अपना नाम और पता लिखें और पारले पॉपिन्स के खाली रेपर के साथ इस पते पर भेजें. पॉपिन्स पॉइंट, पी. ओ. बॉक्स 907, बम्बई-400057
everest/94/PP/186

## भा र त में स र्वा धि क बि क ने वा ले कॉ मि क्स

# डा य म ण्ड कॉ मि क्स

चाचा भतीजा और
राजा की आजादी

## अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचाएं रु. 200/- वार्षिक

हर माह छ: कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर **4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-)** लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।

| 1 वर्ष में महीने | बचत (रु.) | कुल बचत (रु.) |
|---|---|---|
| 12 | 4/- (छूट) | 48.00 |
| 12 | 7/- (डाक व्यय) | 84.00 |
| 1 | 48/- (13वीं वी.पी. फ्री) | 48.00 |
| सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री | | 20.00 |
| | | 200.00 |

सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और **सदस्यता शुल्क के 10 रु.** डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छ: कॉमिक्स होगी।

**हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।**

नाम ____________________

पता ____________________

____________________

डाक __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड कामिक्स का
900 वाँ अंक

## चाचा चौधरी राका का खेल

खूखार राका फिर आ गया है, उसने चमत्कारी दवाई पी रखी है जिससे वह मर नहीं सकता, उसके जुल्मों से चारों तरफ दहशत फैली है। कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी और शक्तिशाली साबू के सामने राका एक विशाल समस्या बनकर खड़ा है।

## डायमण्ड कामिक्स गिफ्ट बॉक्स

| | |
|---|---|
| चाचा चौधरी गिफ्ट बॉक्स 6 कॉमिक्स + 10 स्टिकर | 48.00 |
| पिंकी गिफ्ट बॉक्स 6 कॉमिक्स + 10 स्टिकर | 48.00 |
| बिल्लू गिफ्ट बॉक्स 6 कॉमिक्स + 10 स्टिकर | 48.00 |
| फैण्टम गिफ्ट बॉक्स 4 कॉमिक्स + 10 स्टिकर | 60.00 |
| अमर चित्रकथा गिफ्ट बॉक्स 6 कॉमिक्स + 10 स्टिकर | 60.00 |

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

Scanned with CamScanner

Tough
ones for
Rough ones
ATHLETE
(Canvas)
SCHOOLMATE-02
(Synthetic)
SCHOOLMATE-B 01
(Leather)
SCHOOLMATE-G 01
(Leather)
RELAXO
Exclusive School Shoes
CANVAS ▪ SYNTHETIC ▪ LEATHER
Arms Communications/01/RFL/5/95

# आओ बात करें

अंदमान में सेल्युलर जेल की काल कोठरी। नीचे सीढ़ियां उतरकर फांसी देने के लिए जगह। फांसी का फंदा लटका हुआ है जिसने न जाने कितने युवकों को अपने घेरे में जकड़कर खत्म कर डाला। अनेक कोठरियां और फिर कमरा नम्बर १२३। यहीं रहे थे विनायक सावरकर-चौदह बरस तक। इसी जेल के बाहर एक मूर्ति लगी है। मूर्ति वीर सावरकर की है।

आजादी के अनोखे सौदागर थे सावरकर। आज भी बहुत-से देशवासी उनके बारे में नहीं जानते। अंग्रेज उनके नाम से घबराते थे। उन्हें दो जन्म के कारावास की सजा दी गई थी।

अंदमान वही है जिसे काला पानी नाम दिया जाता था। भारत की मुख्य भूमि से दूर बर्मा के निकट एक भारतीय द्वीप है। इसके बिना आजादी का इतिहास अधूरा है। यहीं सावरकर दिन भर कोल्हू में जुतकर उसे चलाया करते थे।

महाराष्ट्र के खाते-पीते परिवार में वह जन्मे थे। मां उन्हें बहादुर बनाना चाहती थीं। शिवाजी की कहानियां सुनाया करतीं। राणा प्रताप की बातें बतातीं। बालक से फिर उन कहानियों को सुनतीं। कई सवाल पूछतीं। कहतीं— "तुम भी शिवाजी की तरह बहादुर बनोगे ना ?"

बालक तनकर खड़ा हो जाता, कहता— "जरूर मां।"

बालक रोज मां के पांव छूकर स्कूल जाता। एक दिन किसी बात पर मां ने उसे डांट दिया। वह भी रूठ गया। बिना पांव छुए ही स्कूल को चल दिया। स्कूल पहुंचकर बार-बार मां का ध्यान आता रहा। आखिर घर की तरफ दौड़ा। मां से क्षमा मांगी तो वह सिर पर देर तक हाथ फेरती रहीं। तब स्कूल लौटा।

मां ने लकड़ी की तलवारें बनवा दी थीं। बालक अपने साथियों के साथ तलवार चलाने का अभ्यास किया करता था। किशोर हुआ तो उत्साह हिलोरें मारने लगा। गणेश-पूजा और शिवाजी उत्सव किए जाते। मित्रों के साथ सेवा के काम मिल-जुलकर करते।

इस सदी के शुरू के दिनों में वह विलायत गए— बैरिस्टर बनने के लिए। लेकिन मन में इच्छा थी, देश को दासता से मुक्त किया जाए। लंदन में 'इंडिया हाउस' आज भी है, जो देशभक्तों का गढ़ बन गया था। सावरकर देश की नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति का संदेश देना चाहते थे। उन्हें बताना चाहते थे कि अंग्रजों ने भारत को किस तरह निर्धन बना दिया है। कितने ही क्रांतिकारी और देशभक्त युवक उन्होंने तैयार किए। 'इंडिया हाउस' में ही सावरकर की गांधी जी से मुलाकात हुई। 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' नाम से उन्होंने एक पुस्तक लिखी। सावरकर की गतिविधियां बढ़ती जा रही थीं। ब्रिटिश सरकार चौकन्ना हो उठी।

लंदन के विक्टोरिया स्टेशन पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत ने उन्हें भारत भेजने का निर्णय किया। कड़े पहरे में 'मोरिया' नामक जहाज में उन्हें भारत ले जाया जा रहा था। फ्रांस के निकट सावरकर जहाज से कूद पड़े। वहां फ्रांसीसी पुलिस ने उन्हें ब्रिटिश पुलिस के हवाले कर दिया। भारत आने पर सजा भुगतने के लिए सावरकर को अंदमान भेज दिया गया।

सावरकर १९३७ में बन्दी जीवन की यातना से मुक्त हुए लेकिन उन्होंने संघर्ष का रास्ता नहीं छोड़ा। ऐसे महापुरुष देश की नई पीढ़ी को सदा प्रेरणा देते रहेंगे कि वे देश के लिए मर मिटने का संकल्प लेकर चलें।

स्वाधीनता पर न्योछावर होने वाले देशभक्तों को नमन्।

—तुम्हारे भइया

नंदन

अगस्त '९५
वर्ष : ३१ अंक : १०

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

## कहां क्या है

कहानियां



कविताएं



इस अंक में विशेष



स्तम्भ



**आवरण : आर. गणेशन; एलबम : एम. एस. अग्रवाल**

सहायक सम्पादक : **देवेन्द्रकुमार**
मुख्य उप-सम्पादक : **क्षमा शर्मा**; उप-सम्पादक : **डा. चन्द्रप्रकाश**; **डा. नरेन्द्रकुमार**; चित्रकार : **नारायण**

# नटराज की मूरत

—रचना शर्मा

भला अनंतपुर के सेठ दानमल को कौन नहीं जानता ? उनकी सज्जनता और दानवीरता दूर-दूर तक मशहूर थी। वह गरीब व जरूरतमंद लोगों की खूब सहायता करते थे। इतने दानी और दयालु होने पर भी उनमें अहंकार नाम मात्र को नहीं था। वह बहुत ही सीधे और भले आदमी थे।

'दानवीर जी की हवेली' के नाम से उनका घर अत्यंत मशहूर था। उस हवेली के आंगन में भगवान नटराज की मूर्ति लगी हुई थी। इस मूर्ति में कीमती हीरे-जवाहरात लगे हुए थे। वर्षों पुरानी होने पर भी उसकी चमक-दमक ज्यों की त्यों थी। यह मूरत उनके पुरखों द्वारा लगाई गई थी।जितनी ख्याति सेठ दानमल जी की थी, उतनी ही ख्याति नटराज की मूर्ति की भी थी।

एक दिन की बात है, शाम का समय था। सेठ दानमल अपनी पालकी में बैठे हुए कहीं से लौट रहे थे। अचानक उन्हें किसी के कराहने की आवाज सुनाई पड़ी। आवाज झाड़ियों के पीछे से आ रही थी। सेठ जी ने नौकरों को आदेश दिया—"जरा उधर देख कर मालूम करो, कौन कराह रहा है ?"

नौकरों ने उधर जाकर देखा। उन्होंने बताया—"झाड़ियों के पीछे एक आदमी घायल अवस्था में पड़ा है। वह कराह रहा है।" सेठ जी पालकी से उतरे। स्वयं झाड़ियों के पीछे गए तथा घायल व्यक्ति को देखा। उसकी हालत गंभीर थी। ऐसा लगता था,जैसे किसी ने उसे बुरी तरह मारा हो और शायद उसे मरा हुआ समझ कर यहां फेंक दिया हो।

सेठ जी ने नौकरों से कहा—"इस व्यक्ति को उठाकर मेरी पालकी में लिटा दो।" उसे आराम से लिटाकर सेठ जी स्वयं पैदल चलने लगे। वह चाहते थे कि शीघ्र ही घर पहुंचकर उस व्यक्ति का इलाज करवाया जाए। उन्होंने वैद्यराज को बुलवाया। वैद्य जी ने उसके घावों पर मरहम लगाया और कुछ दवाइयां खाने के लिए दीं।

इस तरह उसका इलाज कई दिनों तक चलता रहा। उसकी सेवा स्वयं सेठ दानमल कर रहे थे। उसने अपना नाम श्रुतकीर्ति बताया और कहा—"मैं कंचनपुर का रहने वाला हूं। अपने कुछ साथियों के साथ यात्रा को निकला था। मगर रास्ते में उन्होंने मेरे साथ धोखा किया। वे मेरा धन छीन कर ले गए और मार-पीटकर मुझे यहां डाल गए।"

उसकी कहानी सुनकर सेठ जी को बहुत दया आई। अब वह धीरे-धीरे स्वस्थ होता जा रहा था। वह घर जाने की आज्ञा चाहता था। मगर दानमल जी नहीं माने। उन्होंने उसे कुछ दिनों और रुकने के लिए कहा, ताकि वह एकदम स्वस्थ हो जाए।

वास्तव में उसका नाम श्रुतकीर्ति नहीं था और न ही वह कंचनपुर का रहने वाला था। उसका असली नाम था मलयकेतु। वह विदिशा का निवासी था। पेशे से वह चोर था। अपने साथियों के साथ चोरी करके आ रहा था। रास्ते में उसके दल के लोगों के मन में बेईमानी आ गई। उन्होंने उसे मारा-पीटा और सारा धन छीन लिया। वे उसे मरा हुआ समझकर फेंक गए थे।

मलयकेतु सेठ जी की भलमनसाहत से बहुत खुश था। उसका मन बदलने लगा था। वह सोच रहा था कि उसने सेठ जी से झूठ बोलकर अच्छा नहीं किया है। वह उन्हें अपनी वास्तविकता बता देना चाहता था। पर मन ही मन डर रहा था कि कहीं असली परिचय जानकर सेठ जी उससे नफरत न करने लगें।

इसी उधेड़बुन में कई दिन निकल गए। मलयकेतु, श्रुतकीर्ति बन कर सेठ जी के घर-परिवार में हिलमिल गया। अब उसे घर की याद भी आने लगी थी। मगर उसका मन सेठ जी के घर के आंगन में लगी नटराज की मूर्ति में अटका हुआ था। वह इस सुंदर मूर्ति को प्राप्त करना चाहता था। वह उसे चुराए या नहीं, इसी धर्मसंकट में फंसा हुआ था।

आखिर कुछ दिनों बाद उसने वैसा ही कर दिखाया। एक रात उसने नटराज की मूर्ति को उखाड़ा और कपड़े में छिपाकर रफूचक्कर हो गया। किसी को कानों-कान खबर तक नहीं लगी।

पर वह अनंतपुर राज्य की सीमा को पार करते-करते पकड़ा गया। कुछ ग्रामीणों ने देखा कि एक अनजान व्यक्ति किसी वस्तु को छिपाकर ले जा रहा है। अतः उनका ध्यान उधर गया। कपड़े में छिपाने के बाद भी नटराज पर लगे हीरे चमक रहे थे। गांव वालों ने अपने मन की शंका गांव के कोतवाल को बताई। कोतवाल ने उसकी तलाशी ली। वह पकड़ा गया। यह सब इतना झटपट हुआ कि मलयकेतु जैसा चोर भी ठगा-सा रह गया।

कोतवाल ने ज्योंही कपड़ा हटाकर उस मूर्ति को देखा, तो पहचानते देर न लगी। दानमल जी की हवेली में लगी मूर्ति सब की स्मृति में बसी हुई थी।

उधर सुबह हवेली में लगी मूर्ति गायब मिली। साथ ही श्रुतकीर्ति भी बिना बताए वहां से चला गया था। नौकरों ने दानमल जी को सारी बातें बताईं। सेठ जी ने उनकी बातें सुनकर यों गर्दन हिलाई, जैसे वह सब कुछ पहले से ही जानते हों। नौकरों को बहुत आश्चर्य हुआ। हवेली का चौकीदार तो बहुत परेशान था। सोच रहा था— 'सेठ जी मुझे लापरवाही के लिए बहुत डांटेंगे, शायद नौकरी से ही निकाल दें।' पर ऐसा कुछ नहीं हुआ और न ही सेठ जी ने इस बात की शिकायत शहर कोतवाल से की।

दूसरे दिन चोर को राज दरबार में पेश किया गया। सारे दरबारी दानमल की हवेली की उस मूर्ति को भली प्रकार पहचानते थे। राजा ने सेठ जी को दरबार में बुलवाया और पूछा—"सेठ जी, आप इस मूर्ति को पहचानते हैं?"

सेठ जी ने कहा—"हां हुजूर, अच्छी तरह पहचानता हूं। यह नटराज की मूर्ति है तथा मेरी हवेली में लगी हुई थी।"

"पर इसके चोरी हो जाने की शिकायत आपने न शहर कोतवाल से की और न ही राज दरबार में। यह तो गनीमत थी कि अनंतपुर की सीमा के पास स्थित सुजानपुर गांव के लोगों ने चोर को पकड़ लिया। यह रहा इस मूर्ति का चोर। क्या आप इसे पहचानते हैं?"—राजा ने पूछा।

"हां महाराज, मैं अच्छी तरह पहचानता हूं। यह कंचनपुर निवासी श्रुतकीर्ति है। मेरा अच्छा मित्र है। कल ही मैंने इसे यह मूर्ति उपहार में देकर विदा किया था।" —सेठ जी ने कहा।

यह सुनकर सब को आश्चर्य हुआ। सेठ दानमल के बयान से यह जाहिर था कि श्रुतकीर्ति चोर नहीं है। मगर सबसे अधिक आश्चर्य तो मलयकेतु को हुआ। उसकी आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। वह सेठ जी के पैरों पर गिर पड़ा। उनसे क्षमा मांगते हुए बोला—"सेठ जी, मेरा नाम श्रुतकीर्ति नहीं है। मैं मलयकेतु हूं। विदिशा का मशहूर चोर। आप सच-सच क्यों नहीं कहते कि मैं चोर हूं। मैंने आपके विश्वास को ठेस पहुंचाई है। आपने मेरी सेवा की, इतना उपकार किया और मैंने आपके यहां ही चोरी करके विश्वासघात किया है।"

मलयकेतु ने राजा से हाथ जोड़कर विनती की—"महाराज, मुझे कड़ी से कड़ी सजा दी जाए।"

पर सेठ जी ने राजा से विनती की —"हुजूर, आप मलयकेतु को क्षमा कर दें। मैं इसे आज से हवेली में प्रमुख रक्षक के पद पर नियुक्त करना चाहता हूं। जहां तक मलयकेतु के असली परिचय की बात है, वह मैं पहले से ही जानता था कि यह श्रुतकीर्ति नहीं, मलयकेतु है। मेरे गुप्तचरों ने इसके बारे में सब कुछ जान लिया था। मुझे बता भी दिया था।"

"इतना जानते हुए भी आप इसे दोबारा अपने घर रखना चाहते हैं?" —राजा ने कहा।

सेठ दानमल ने कहा—"आखिर चोर भी इंसान ही होता है। न जाने किस मजबूरी में इसने चोरी करना प्रारंभ कर दिया है। पर मेरा विश्वास है कि मैं इसे एक नेक और ईमानदार व्यक्ति बना दूंगा।"

और ऐसा ही हुआ। उसके बाद मलयकेतु एकदम बदल गया। ●

# बजी वीणा

—गिरीश भंडारी

समुद्रगुप्त चक्रवर्ती सम्राट होने के साथ-साथ वीणा बजाने में भी निपुण थे। वह वीणा बजाते, तो सरस्वती के चरणों में रखी वीणा भी अपने आप बज उठती। वह वीणा बजाने में इतने डूब जाते थे कि उससे निकलने वाले स्वर देवी सरस्वती की वीणा को बजाने में समर्थ हो जाते थे।

सिर्फ प्रतिष्ठानपुर के राजा ने समुद्रगुप्त का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया था। प्रतिष्ठानपुर के राजा स्वाभिमानी थे। वह भी सरस्वती के भक्त और निपुण वीणा वादक थे। पारखी तो निश्चय ही नहीं कर पाते थे कि वीणा बजाने में समुद्रगुप्त श्रेष्ठ हैं या प्रतिष्ठानपुर के महाराज।

दोनों के बीच कुछ समस्याएं इस प्रकार खड़ी हुईं कि समुद्रगुप्त ने प्रतिष्ठानपुर पर आक्रमण कर दिया।

प्रतिष्ठानपुर के महाराज बड़ी वीरता से लड़े पर समुद्रगुप्त के सामने उनकी सेना टिक न पाई। वह हार गए और पहाड़ियों की शरण में चले गए।

समुद्रगुप्त वापस अपनी राजधानी पहुंचे। युद्ध के कारण कई महीनों तक वह वीणा बजा नहीं सके थे। विजय समारोह समाप्त होने के बाद उन्होंने अपनी वीणा निकाली। मां सरस्वती की मूर्ति के सामने वीणा बजाना शुरू किया। एक वीणा देवी सरस्वती के चरणों में रखी थी।

आज कुछ अनोखा घटा। समुद्रगुप्त की वीणा का मधुर स्वर गूंजा, पर सरस्वती की वीणा मौन रही। समुद्रगुप्त ने और सावधानी से बजाना शुरू किया, तो एक विचित्र बात हुई। वीणा से स्वर तो जरूर निकले, पर वह भिन्न थे। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि देवी सरस्वती के चरणों में रखी वीणा से ये अलग स्वर कैसे उठ रहे हैं। स्वर व राग अद्भुत थे पर वह जो बजा रहे थे, उससे बिलकुल भिन्न। उन्होंने वीणा बजाना बंद कर दिया, लेकिन आश्चर्य कि सरस्वती के चरणों में रखी वीणा बजती रही।

समुद्रगुप्त पारखी तो थे ही। वह समझ गए कि इस स्वर के बारे में सिर्फ एक ही व्यक्ति जानता है। वह हैं प्रतिष्ठानपुर के महाराज।

उन्होंने सोचा—'मुझसे अपराध हुआ है। मैंने चक्रवर्ती बनने के लालच में प्रतिष्ठानपुर के महाराज को कला से विमुख कर दिया है। इसी कारण आज देवी सरस्वती ने मेरी आराधना स्वीकार नहीं की।'

अब समुद्रगुप्त ने प्रतिष्ठानपुर जाने की सोची। उन्होंने फौरन अपने अंगरक्षकों को तैयार होने का आदेश दिया। वह उनके साथ प्रतिष्ठानपुर की ओर चल पड़े। वहां की प्रजा ने समुद्रगुप्त को आते देखा, तो फौरन अपने महाराज को इसकी सूचना दी। उन्होंने सोचा था कि शायद समुद्रगुप्त उन्हें पकड़ने आए हैं। पर समुद्रगुप्त के अंगरक्षकों ने उन्हें बताया कि सम्राट का प्रयोजन दूसरा है। प्रतिष्ठानपुर के महाराज तक खबर भिजवाई गई। समुद्रगुप्त के आने की बात सुनकर, वह समुद्रगुप्त से मिलने पहुंचे। समुद्रगुप्त ने गले मिलकर उनसे अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी। सारा मन-मुटाव मिट गया। समुद्रगुप्त ने उनके राज्य को वापस कर दिया।

समुद्रगुप्त वापस आए। उन्होंने मां सरस्वती से क्षमा मांगकर फिर अपनी वीणा उठाई। वीणा के तार झनक उठे। उससे ऐसा अद्भुत स्वर निकला, जैसा पहले कभी नहीं निकला था।

श्रीकृष्ण और राधा जी

# बरसात में छत

—जयप्रकाश भारती

पूरन भगत कोई साधु-संत न थे। माधोपुर में अपने छोटे-से परिवार के साथ रहते। किसी तरह छोटा-मोटा काम करके गुजारा चलाते। बचपन में थोड़ा पढ़-लिख गए थे। आल्हा-ऊदल, बारहमासा के गीत और कई भजन याद कर लिए थे। कभी-कभार गाने बैठ जाते, तो सुनने वालों की भीड़ लग जाती। इसीलिए उनके नाम के साथ लोगों ने भगत जोड़ दिया था।

पूरन की दो संतान थीं— एक थी लड़की रधिया, दूसरा था लड़का नगीना। उन दिनों बरसात का मौसम था। सांझ से ही खूब बादल गरज रहे थे। बारिश होनी शुरू हुई, तो मूसलधार ऐसी बरसी कि कुछ न पूछो। लगा कि प्रलय हो जाएगी। और पूरन भगत के लिए तो उस रात आसमान ही फट पड़ा।

बरसात में घर की छत टपकने लगी। लेकिन इतना ही होता,तब भी ठीक था। अचानक तेज हवा चलने लगी। कुछ देर बाद छत हरहराकर गिर गई। दोनों बच्चे चीख पड़े। किसी तरह पूरन ने उन्हें बाहर निकाला। वे भीगते रहे, लेकिन बच्चों की मां? उसे काफी चोट आ गई। फिर अधिक दिन जीवित न रहीं।

इसके बाद पूरन भगत का मन सब तरफ से उचट गया। काम-धाम जैसा था, वह भी ठप पड़ गया। माधोपुर में अब उनका जी न लगता। सोचते कि कहीं और जाकर काम-धंधा करें लेकिन बच्चे? नगीना कुछ बड़ा था, पर रधिया तो अभी काफी छोटी
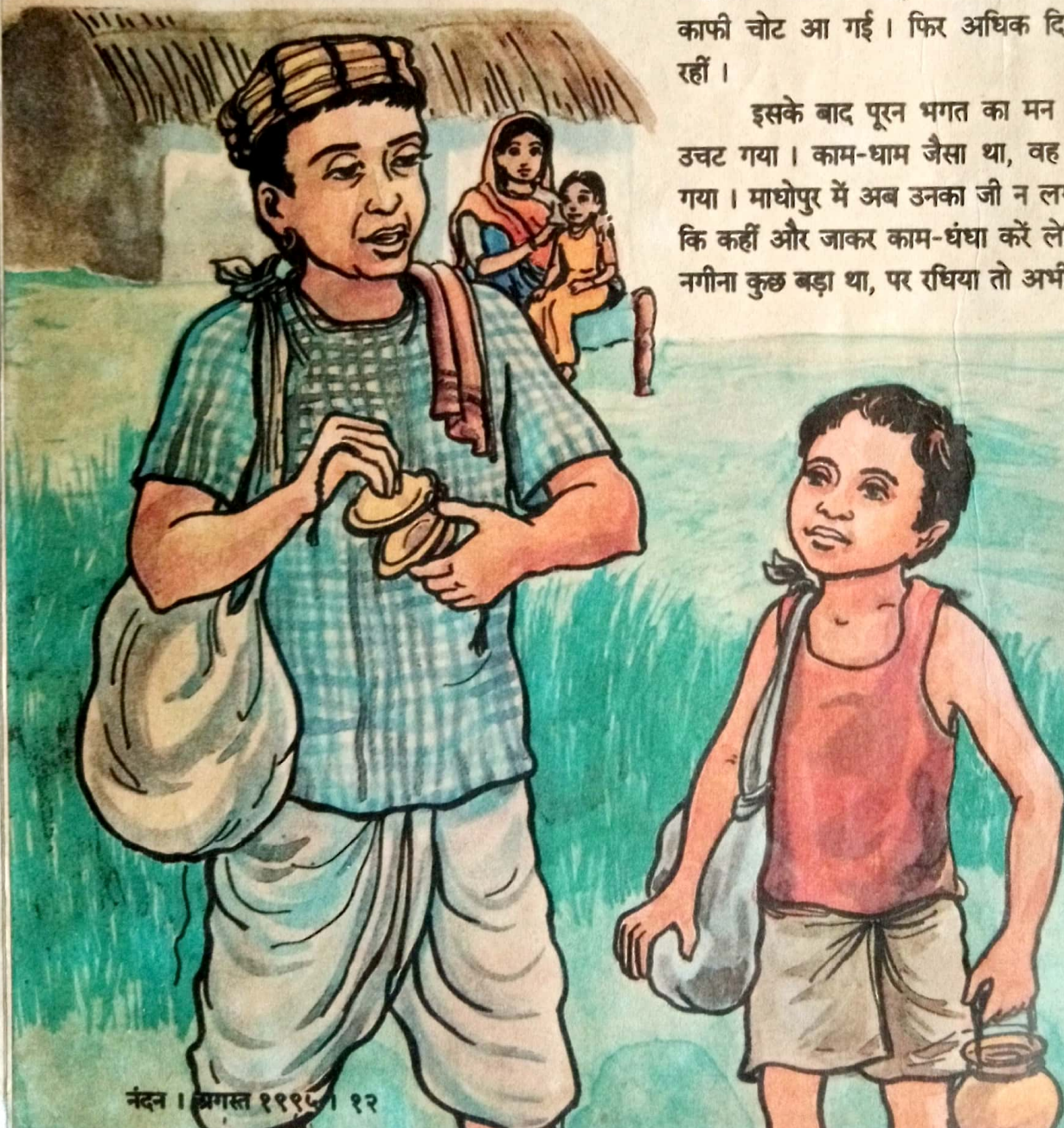
थी। दोनों को साथ लिए-लिए फिरना कठिन था। उन्होंने कुछ सोचा, फिर गांव से बहन को बुला लिया। वह वहां अकेली रहती थीं। भाई का बुलावा कैसे टालतीं।

बस, पूरन भगत ने रधिया को उन्हें सौंप दिया। कहा—"तुम इसे संभालना। जैसे गांव में रहती थीं, वैसे ही यहां रह जाओ। मैं बीच-बीच में पैसे भेजता रहूंगा। लौटूंगा जरूर पर कब, यह नहीं बता सकता।" फिर पूरन भगत नगीना को साथ ले चल दिए।

पूरन भगत मुकंद नगर आ पहुंचे। कुछ रुपयों का जुगाड़ करके लाए थे। यहां-वहां घूम-फिरकर छोटा हाथ ठेला खरीद लिया। उसी पर चाय बनाते और बेचते। नमकीन-मीठे बिस्कुट, मट्ठी और ऐसी ही चीजें भी रख ली थीं। धंधा चल निकला और हर दिन अच्छी आमदनी होने लगी। शुरू में तो नगीना को ठेले के साथ ही रखते। वह काम में मदद किया करता था। छह साल पार किए, तो उसे स्कूल में डाल दिया। पूरन भगत बहन को कुछ-न-कुछ रुपए किसी के हाथ भेज देते। रधिया के लिए नए कपड़े और बहन के लिए धोती का जोड़ा भी साल-दो साल में भिजवा देते।

समय फिसलता गया, निकलता गया। रधिया की याद आती, बहन को याद करते, पर गांव न जा पाते। सोचा करते— 'बेटी बड़ी हो गई होगी।' बहन ने एक बार कहलवा भेजा— 'इस बार सलूनो (रक्षा-बंधन) पर जरूर आ जाना। रधिया तुम दोनों को बहुत याद करती है।' यह सुनकर पूरन की आंखें भर आईं। उसने तय किया— 'चाहे जो हो, इस बार माधोपुर जाना ही है।'

मुकंद नगर बड़ा शहर था। नए डिजाइन के रेशमी कपड़े, रंगीन रिबन, चांदी की पाजेब, सुगंधित साबुन, तेल-इत्र, इलायची, सितारों वाली ओढ़नी और भी न जाने क्या खरीद लिया पूरन ने। नगीना ने भी बहन के लिए कुछ सौगातें ली थीं। पूरन ने नगीना को साथ लिया और चल दिया अपने गांव। माधोपुर में तो रेल

स्टेशन था नहीं। वे खातीपुर जा पहुंचे। वहां से पैदल या इक्के का रास्ता था।

रात हो गई थी। आसमान में काले-काले बादल घिरे थे। पूरन और नगीना छोटी-सी सराय में ठहर गए। उन्होंने खाना खाया और सो गए। बाप और बेटा— दोनों ही गांव के मीठे सपने ले रहे थे। तभी शोर-सा सुनाई दिया। तेजी से बाढ़ का पानी लप-लप करता आ रहा था। अंधेरी रात। किसी को कुछ नहीं सूझ रहा था। हर कोई जान बचाकर भागा। पूरन ने अपनी संदूकची संभाली। नगीना को पकड़ा और भाग चला। वे ऐसे दौड़ चले मानो शैतान उनके पीछे पड़ा हो। कुछ ही दूर पर, अचानक पूरन का पांव फिसला और वह गिर पड़ा। तभी पानी का तेज रेला आया और नगीना को बहा ले गया। रात के अंधेरे में बस कुछ शोर सुनाई दिया।

रात बीती तो पूरन एक टीले पर बैठा था। साथ में संदूकची थी, लेकिन नगीना का कहीं पता न था। थका-थका पूरन कोई भजन गाना चाहता था, लेकिन मुंह से बोल नहीं फूट रहे थे। आंखों के सामने नगीना का भोला चेहरा तैर जाता था बार-बार। आंखें

फैलाकर सब तरफ देखता, फिर सिर झुका लेता। चारों ओर पानी-ही-पानी था। दूर-दूर तक और कोई नजर नहीं आ रहा था। आखिर कहां होगा नगीना? कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया! यह बुरा विचार उसे कंपा गया। वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करता रहा— 'उसे कुछ न हो भगवान। उसकी रक्षा करना।'

कुछ देर बाद पूरन टीले से उतरा। पानी और कीचड़ के बीच कदम घसीटता जैसे-तैसे बढ़ चला। सामने सूने मकान नजर आ रहे थे। कहीं कोई नहीं था। इसी तरह पूरन भगत काफी दूर चला गया, लेकिन नगीना उसे कहीं न दिखाई दिया। पूरन की आंखें आंसुओं से भर गईं— यहां आकर क्या पाया उसने? अपने बेटे को भी खो दिया।

कहां जाए पूरन, क्या करे? पर कुछ न कुछ तो करना ही था। आखिर उसने माधोपुर लौटने का फैसला किया— अपनी रधिया के पास। मन में एक हल्की-सी आशा भी थी, शायद वहां नगीना का पता मिल जाए। और हारा-थका पूरन, निराश मन से माधोपुर की तरफ बढ़ चला।

बहन तो देखते ही सन्न रह गई। पूरन भगत ने उसे जल्दी-जल्दी सब बताया, रधिया को गोद में लेकर प्यार किया। एक-दो दिन वहां रुका और फिर चलने की तैयारी करने लगा। बहन तो नहीं, पर रधिया जैसे कुछ समझ गई। रोती हुई पूरन भगत से लिपट गई— "मैं भी चलूंगी। मैं भी..." बस, बार-बार एक ही बात कहे जा रही थी।

पूरन भगत मना न कर सका। सच तो यह था, वह अब बेटी से एक पल को भी दूर नहीं होना चाहता था। नगीना को खोने के बाद अब रधिया ही तो उसका सहारा रह गई थी। और पूरन भगत का सफर एक बार फिर शुरू हो गया। इस बार रधिया उसके साथ थी। रास्ते में वह नगीना के बारे में बार-बार पूछती, फिर हिम्मत-सी बंधाती— "देख लेना बापू, नगीना भैया हमें जरूर मिलेंगे।"

पूरन इस बार मुकंद नगर आ तो गया, पर न तो वह खुलकर हंसता-बोलता, न कभी बारहमासा या आल्हा के बोल उठाता। रधिया उससे रोज शाम को खोद-खोद कर पूछती— "नगीना कब आएगा?" पर पूरन ठीक से जवाब न दे पाता, कभी तो झुंझला ही पड़ता।

दिन बीते, महीने बीते। फिर बरसात आई। राखी का त्योहार आने को था। शहर में ठेलों पर रंग-बिरंगी राखियां बिकती दिखाई देतीं। रधिया ने दो राखियां खरीद ली थीं। वह हाथ जोड़े घंटों भगवान की मूर्ति के सामने बैठी रहती। प्रार्थना करती— 'गोपालजी, मेरे भैया को भेजो।

उस दिन दोपहर का समय था। पूरन बैठा-बैठा ऊंघ रहा था। तभी किसी ने आवाज दी— "बापू!"

पूरन चौंक उठा। आंखों पर विश्वास न हुआ। नगीना सामने खड़ा था। नगीना ने बताया कि वह इतने दिन कहां रहा। उस बरसात में बेहोशी की हालत में एक लाला जी उसे अपने घर ले गए। वह उनके यहां रहता रहा। जब उसने बातों-बातों में उन्हें बताया कि उसका बापू चाय बेचने वाला पूरन भगत है तो शहर के बाजार में छोड़ गए उसे। नगीना नहीं बता पाया कि लाला जी का नाम क्या था।

उस दिन शाम को माधोपुर से पूरन की बहन भी किसी गांव वाले के साथ वहां आ गई। दूसरे दिन राखी का त्योहार दो बहनों ने एक साथ मनाया। ●
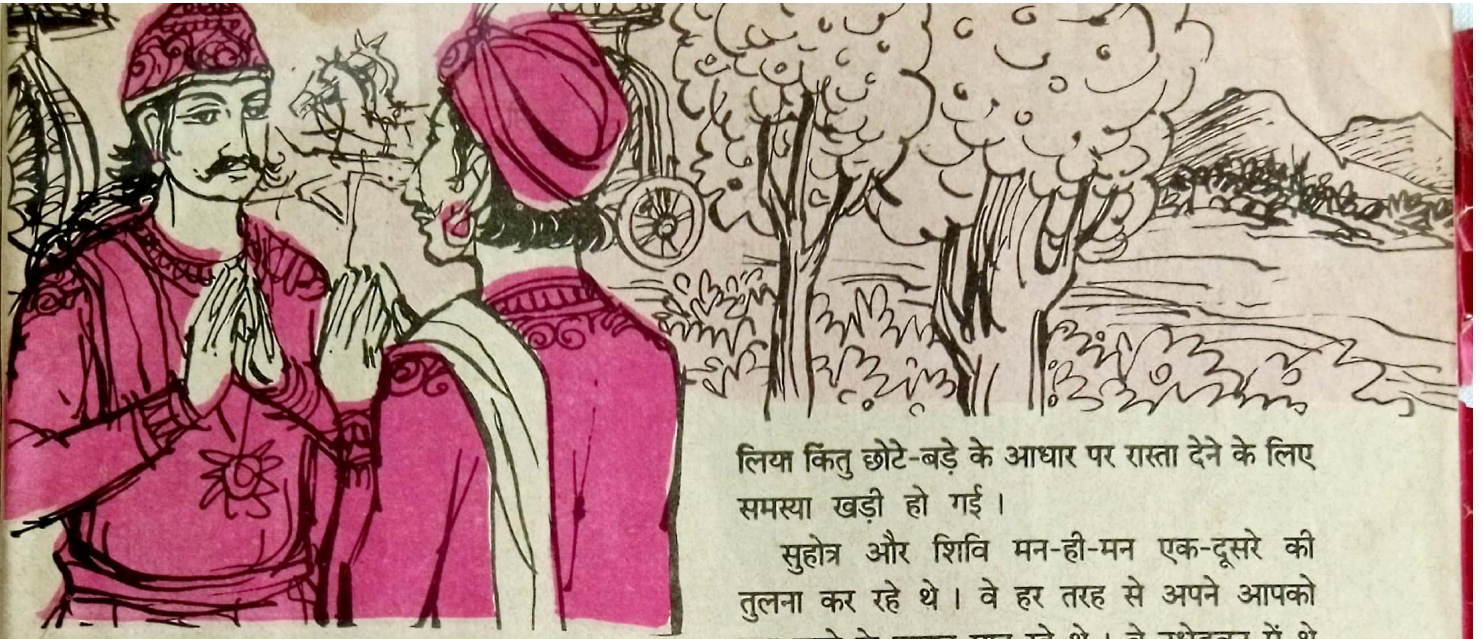
# चल दिया रथ

—रेखा 'कौस्तुभ'

कुरुवंश में एक राजा थे, सुहोत्र। पास में ही एक और राज्य था। वहां उशीनर वंश का शासन था। उशीनर वंश के राजा का नाम शिवि था। दोनों राज्यों में मित्रतापूर्ण सम्बंध थे। वे एक-दूसरे का बहुत मान-सम्मान करते थे।

दोनों राजा समान रूप से वीर, प्रतापी और ज्ञानी थे। दान-पुण्य देने में कोई किसी से कम नहीं था। सबसे बड़ी बात यह थी कि वे दोनों ही राजर्षि के रूप में विख्यात थे। सभी राजा उनका आदर करते थे।

एक बार की बात है, राजा सुहोत्र कहीं से लौटकर आ रहे थे। राजा शिवि भी उसी रास्ते, सामने की ओर से आ रहे थे। उन दोनों की भेंट हुई। दोनों ने एक-दूसरे को प्रेम और आदर सहित नमस्कार किया। एक-दूसरे की कुशलक्षेम पूछी।

पर एक नई समस्या उपस्थित हो गई। उन दोनों में कौन अधिक बड़ा और कौन छोटा है, यह जानना मुश्किल हो गया। जब तक यह तय नहीं हो जाता, तब तक कौन किसके लिए रास्ता छोड़े, जान पाना कठिन था। दोनों एक-दूसरे के मित्र थे और अपने को समान समझते थे, इसीलिए उन्होंने अभिवादन तो कर लिया किंतु छोटे-बड़े के आधार पर रास्ता देने के लिए समस्या खड़ी हो गई।

सुहोत्र और शिवि मन-ही-मन एक-दूसरे की तुलना कर रहे थे। वे हर तरह से अपने आपको एक-दूसरे के समान मान रहे थे। वे उधेड़बुन में थे कि कौन किसको जाने के लिए मार्ग दे। यही बात उनके सारथी भी सोच रहे थे। वे भी अपने-अपने राजा को दूसरे राजा की तुलना में किसी भी तरह कम नहीं आंक रहे थे। इसलिए उनमें से किसी भी सारथी ने अपने रथ को मार्ग से नहीं हटाया। दूसरी ओर न ही राजा सुहोत्र और शिवि में से किसी ने सारथी को रथ हटाने के लिए आदेश दिया।

इसी असमंजस में बहुत समय बीत गया। वे एक-दूसरे पर आरोप भी नहीं लगा सकते थे कि तुम मुझसे छोटे हो और मेरा अपमान कर रहे हो। वे एक-दूसरे के सामने मूर्ति की तरह स्थिर खड़े थे।

अचानक 'नारायण-नारायण' का स्वर गूंजा। दोनों का ध्यान उस स्वर की ओर गया। उन्होंने देखा कि देवर्षि नारद उधर ही चले आ रहे हैं। वे उन दोनों राजाओं के लिए सम्मान योग्य थे। यह सोचकर वे अपने-अपने रथों से उतरे। उन्होंने नारद जी का अभिवादन किया। नारद जी ने उनसे उनकी कुशलता के समाचार जाने।

वैसे नारद जी उन दोनों के रथों को आमने-सामने खड़ा देखकर, मन-ही-मन सब कुछ समझ गए थे। फिर भी वह इस सम्बंध में कुछ नहीं बोले। आखिर राजा सुहोत्र ने नारद जी से इस गम्भीर समस्या का हल जानने की सोची। वह बोले—"देवर्षि, हम दोनों मित्र

सौभाग्यशाली हैं। हमें ठीक समय पर आपके दर्शन हुए। इस समय हम असमंजस में हैं और आपसे मार्गदर्शन चाहते हैं।''

नारद जी ने पूछा—''कहिए राजन ! मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं ?''

सुहोत्र बोले—''मैं और नरपति शिवि एक-दूसरे के मित्र हैं। संयोगवश आज एक ही मार्ग पर हम दोनों के रथ आमने-सामने आ खड़े हुए हैं। मित्रता व समानता के कारण हमने एक-दूसरे का अभिवादन भी किया है। पर यह निश्चय नहीं कर पा रहे हैं कि कौन किसके लिए रास्ता छोड़े। आप हमें धर्म के अनुकूल उचित व्यवस्था बताएं।''

नारद जी कुछ कहते, इससे पहले ही राजा शिवि ने भी कहा—''सचमुच, मित्र सुहोत्र ने एकदम सही बात कही है। मैं भी बहुत देर से इसी बात पर विचार कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि महाराज सुहोत्र गुण, शील और धर्म में श्रेष्ठ हैं। जहां तक राज्य और उसकी व्यवस्था की बात है, उसमें भी वह किसी प्रकार मुझसे कम नहीं। मैं किसी भी तरह उन्हें अपने से कम नहीं मानता।''

सुहोत्र ने शिवि की ओर प्रशंसा पूर्वक देखते हुए कहा—''महाराज शिवि, मेरी तुलना में आप किसी भी तरह कम नहीं हैं। यही हमारी समस्या है। हम दोनों समान हैं। यदि दोनों में से कोई भी छोटा-बड़ा होता तो धर्म-व्यवस्था के अनुसार मार्ग छोड़ने का निर्णय हो जाता। पर समान व्यक्तियों को ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए, यह समझ में नहीं आ रहा है।''

नारद जी ने हंसते हुए उन दोनों की ओर देखा। वे हाथ जोड़े उनका निर्णय जानने के लिए नतमस्तक थे। नारद जी बोले—''यह तो बहुत अच्छी बात है कि आप एक-दूसरे का आदर करते हैं। एक-दूसरे के गुणों को भली प्रकार जानते हैं। दूसरे की अच्छाइयों को देखना मनुष्य की महानता है। अतः आप दोनों महान और पूजनीय हैं। मैं आप दोनों का अभिनंदन करता हूं।''

''देवर्षि, यह आपकी महानता है। वरना हम किस योग्य हैं।''—राजा सुहोत्र और शिवि ने विनीत स्वर में नारद जी से कहा।

नारद जी ने रहस्यमयी मुसकान से दोनों की ओर देखा। उन्होंने कहा—''मैं यही बात आप दोनों को समझाना चाहता हूं। आप परम ज्ञानी हैं। इसीलिए आप लोगों ने अपनी समस्या का हल स्वयं ही बता दिया है।''

वे दोनों नारद जी की बात नहीं समझ पाए। उन्होंने हैरानी से एक-दूसरे की ओर देखा और नारद जी से बोले—''प्रभु, हम आपकी बात नहीं समझ पाए। कृपया समझाकर बताएं।''

नारद जी ने कहा—''योग्य और गुणीजनों से हमेशा उदारता की आशा की जाती है। बड़ा वह होता है जो अपने आपको सबसे छोटा समझता है। छोटा मान लेने से व्यक्ति छोटा नहीं हो जाता। अभी आप अपने आपको छोटा कह रहे थे। आप ऐसा सचमुच मान लें, तो समस्या अपने आप हल हो जाएगी।''

नारद जी की बात सुनकर दोनों राजा सब कुछ समझ गए। उन्हें अपने-अपने बड़प्पन और अहंकार पर ग्लानि हो रही थी। उन्होंने नारद जी के प्रति आभार प्रकट किया। परस्पर गले मिलते हुए उन्होंने सारथियों को संकेत दिया कि सम्मान सहित दूसरे रथ को जाने का रास्ता दे दें। कब किसने, किसके रथ को जाने दिया, उनकी उदारता के कारण पता तक नहीं चल पाया। ●

# आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला जीनियस; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला बुद्धिमान; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : औसत बुद्धि; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट ।

## कहानी लिखो : १४१

☐ सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । उसे १५ अगस्त '९५ तक कहानी लिखो, नंदन मासिक, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ के पते पर भेज दीजिए । चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : अक्तूबर '९५

## चित्र-पहेली : १४१

☐ 'नगर की चहल-पहल' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए, जो ६''×९'' से बड़ा न हो । चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता लिखिए । उसे १५ अगस्त '९५ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए । चुना गया चित्र नंदन में छपेगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : नवम्बर '९५

# रात की रानी

—सुभद्रा मालवी

धरती पर जितने भी फूल हैं, उन सबकी एक-एक परी है। फूल के ही रंग के उनके पंख हैं। उसी फूल की सुगंध उनके शरीर से निकलती है।

गुलाब परी, गेंदा परी, सूर्यमुखी परी और बेला परी आदि सब परियों का निवास कुसुम नगरी में है। इन सबकी एक रानी है, चम्पक परी। एक राजकुमारी भी है जिसका नाम है जूही परी। सभी परियों के अपने अलग-अलग महल हैं।

कंटक जाति के बौनों की सेना परियों की रक्षा के लिए सदा सजग रहती है। जब भी कोई शत्रु कुसुम नगरी पर आक्रमण करता है तो ये कंटक बौने अपने शूल चुभो-चुभोकर अचानक युद्ध करते हैं। शत्रु लहूलुहान होकर भाग जाते हैं।

फूल परियों की खिलखिलाहट से कुसुम नगरी सदा गूंजती रहती है। इनके शरीर की सुगंध वातावरण में फैली रहती है। किसी को कोई दुःख नहीं है। लेकिन एक समय यहां बड़ा संकट भी आया था।

कुसुम नगरी से बहुत दूर ग्रीष्म राज्य का राजा अकालमूर्ति रहता था। वह दुष्ट था। वह सदा कुसुम नगरी पर आक्रमण करने की ताक में रहता था।

कुसुम नगरी की परियां भी, सभी परियों की तरह धरती के बच्चों को बहुत प्यार करती थीं। रात में जब सारा संसार सो जाता, तब जूही परी अपनी सखियों के साथ चांदनी के रथ पर सवार होती। वह धरती पर यह देखने उतरती कि प्यारे-प्यारे बच्चों को कोई कष्ट तो नहीं पहुंचा रहा है।

एक बार पूर्णिमा की रात को सदा की तरह राजकुमारी जूही परी अपनी सखियों के साथ चांदनी के रथ पर बैठ, धरती की ओर आ रही थी।

अचानक ग्रीष्म राज्य के राजा ने जूही परी पर हमला किया। फिर वह जूही परी को रथ में बिठाकर गायब हो गया। सभी परियां दुखी हो, रोती-रोती रानी परी के पास पहुंचीं।

फूल परियों ने रानी परी को जूही के बारे में बताया। रानी परी मूर्च्छित हो गई। फूलपरियों ने रानी परी के मुंह में अमृतकुंड का जल छिड़का। उसकी मूर्च्छा दूर हुई। राजकुमारी को जल्दी से जल्दी छुड़ाना आवश्यक था क्योंकि वह कुसुम नगरी की भावी रानी थी।

रानी परी दौड़कर अपने जादुई दर्पण के पास गई। दर्पण में रानी परी ने देखा कि ग्रीष्म के राजा ने जूही परी को ले जाकर ठूंठों से बने महल में कैद कर लिया है।

रानी चम्पक परी ने अपनी फूल परियों की सेना को लेकर ग्रीष्म राज्य पर आक्रमण किया। लेकिन ग्रीष्म राज्य के सैनिकों से वे पराजित हो गईं। कंटक बौने भी सैनिकों का कुछ न बिगाड़ सके।

अंत में परी रानी ने समझौता करने के लिए ग्रीष्म राज्य के राजा के पास एक कैक्टस को अपना दूत बनाकर भेजा। कैक्टस ने ग्रीष्म राज्य के राजा को रानी परी का संदेश दिया—''तुम राजकुमारी जूही परी को छोड़ दो। तुम जो चाहोगे, मिल जाएगा।''

अकालमूर्ति यह सुन अट्टहास कर उठा। मन ही मन वह राजकुमारी से विवाह रचाना चाहता था। उसने केवल बदला लेने के उद्देश्य से एक शर्त रखी। कहा—''अगर रात में बना मधु और रात में खिले फूल मुझे भेंट में दिए जाएं, तो मैं जूही परी को छोड़ दूंगा।'' दूत ने यह संदेश रानी परी को दिया।

मगर यह कैसे संभव हो सकता था ? क्योंकि जिस समय की यह बात है, उस समय सभी फूल केवल दिन में ही खिलते थे। संध्या के बाद परियां जब धरती पर उतरकर उन्हें थपकी देतीं, तो वे सो जाते थे। एक भी फूल ऐसा नहीं था जो रात में खिलता हो।

यही बात मधु के बारे में थी। दिन भर मधुमक्खियां फूलों का पराग एकत्र कर मधु बनातीं और अंधेरा होते ही थककर सो जाती थीं। सांझ ढलने के बाद पृथ्वी पर केवल परियां ही दिखाई देती थीं।

परी रानी ने सभा बुलाई और ग्रीष्म राज्य के राजा

की शर्त के बारे में बताया। रानी ने कहा—"जो भी परी रात में फूल खिलाने में समर्थ हो, आगे आए !" सभी फूल परियां सिर झुकाए खड़ी रहीं।

इन्हीं परियों में एक थी रातना परी। यह एक नन्ही-सी परी थी। इसके शरीर से एक अजीब-सी गंध निकलती थी। उसका फूल भी कूड़े के ढेर के पास खिलता था। अन्य परियां उससे घृणा करती थीं।

रातना परी कुसुम नगरी के एक अलग-थलग कोने में एक कुटिया में रहती। उसका स्वभाव मधुर था। वह सदा दूसरों की सहायता करने को आगे रहती थी।

जब रातना परी के पास जूही परी के अपहरण और ग्रीष्म राज्य के राजा की शर्त का समाचार पहुंचा, तो उसने रानी परी के पास जाकर कहा—"मैं रात में फूल खिलाने की कोशिश करना चाहती हूं।" यह सुनकर अन्य फूल परियों ने रातना परी की खूब खिल्ली उड़ाई। मगर रानी परी ने कहा—"मेरे राज्य में सब समान हैं और सबको प्रयास करने का अधिकार है। हमें राजकुमारी जूही परी की जीवन रक्षा की बात ही ध्यान में रखनी चाहिए।" रानी परी ने रातना परी को फूल खिलाने की अनुमति दे दी।

फिर रानी परी ने मधुमक्खियों की रानी को बुलाकर आज्ञा दी कि वह अपनी प्रजा को फूलों का पराग एकत्र करके, रात में मधु तैयार करने का आदेश दे। रानी मधुमक्खी ने ऐसा ही किया। सारी मधुमक्खियां पराग एकत्र करने में जुट गईं।

संध्या होने को थी और समय बहुत कम था, क्योंकि ग्रीष्म राज्य के राजा अकालमूर्ति के महल में राजकुमारी जूही परी मुरझाने लगी थी।

इधर रातना परी ने लौटकर एक पौधा कुटिया के सामने बो दिया और उसे अपने आंसुओं से सींचने लगी। पौधा धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। सांझ होते-होते उसमें छोटी-छोटी असंख्य कलियां निकल आईं। जैसे ही सूरज डूबा, ये कलियां तारों की तरह के फूलों में खिल उठीं। इनमें से मधुर सुगंध निकल रही थी। रातना परी का प्रयास सफल हुआ, लेकिन वह स्वयं अब बहुत निस्तेज और पस्त हो गई थी। बड़ी कठिनाई से उसने महकते फूलों से भरा पौधा ले लिया।

परी रानी के सेवक रथ लिए तैयार खड़े थे। उन्होंने तुरंत रातना परी को पौधे सहित रथ में बैठाया और वेग से परी रानी के पास पहुंचा दिया। अब तक मधुमक्खियों की रानी भी मधु लेकर आ गई थी। रात अभी आधी ही बीती थी। परी रानी ने तुरंत दोनों वस्तुएं दूत के साथ ग्रीष्म राज्य के राजा के पास भेज दीं। दोनों वस्तुएं लेकर राजा ने राजकुमारी जूही परी को मुक्त कर दिया। राजकुमारी की हालत बहुत खराब थी। दूत ने राजकुमारी को रथ में लिटाया और उड़ चला।

रथ रानी परी के महल में पहुंचा। रानी ने अमृतकुंड का जल राजकुमारी जूही परी को पिलाया और उसके शरीर पर भी छिड़का। धीरे-धीरे राजकुमारी ठीक हो गई।

अब सबका ध्यान रातना परी की ओर गया। वह अंतिम सांसें गिन रही थी। रानी परी ने तुरंत दिव्य औषधि का रस रातना परी को अपने हाथ से पिलाया। उससे परी के प्राणों की रक्षा हो गई।

रातना परी स्वस्थ होकर उठ बैठी। परी रानी ने उससे कहा—"आज से जब सब फूल सो जाएंगे, तब तुम्हारा फूल खिलेगा। वह फूल संसार को अपनी सुगंध से महकाता रहेगा। उस फूल को सब 'रात की रानी' के नाम से जानेंगे। तुम्हारा नाम भी रात-रानी परी होगा।" यह कहते हुए रानी परी ने जैसे ही नन्ही परी के सिर पर हाथ रखा, उसका रूप रात की रानी के फूल के समान सुंदर हो गया। उसका शरीर भी सुगंधित हो उठा। रानी ने उसके लिए फूलों का एक महल बनवा दिया। •

# देखा सपना

—दिनेश दिवाकर

मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में उन दिनों बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार था। वहां बौद्ध मठों की भरमार थी। इन मठों में हजारों की संख्या में भिक्षु थे जो बौद्ध धर्म की शिक्षाएं ग्रहण करते थे। इन्हीं मठों में एक मठ था, निर्वाण मठ। निर्वाण मठ के प्रधान भिक्षु बुद्ध के प्रिय शिष्य, महाकाश्यप थे। मठ के भिक्षुओं में से एक था देवरात। देवरात बहुत महत्वाकांक्षी था। वह हमेशा अपने ज्ञान के घमंड में चूर रहता था।

एक दिन उसने महाकाश्यप से एक प्रश्न पूछा—"गुरु जी, आपके चरणों में बैठकर मैंने जितना ज्ञान प्राप्त किया, उतना अन्य कोई भिक्षु न कर पाया। लेकिन अभी तक मैं निर्वाण को प्राप्त नहीं हो पाया। कृपया कोई उपाय बताएं जिससे एक ही छलांग में, मैं जीवन की बुलंदियों को छू लूं, मोक्ष प्राप्त कर लूं।"

महाकाश्यप ने देवरात की ओर देखा। देवरात के मुख पर अहंकार स्पष्ट झलक रहा था। महाकाश्यप ने कहा—"पहले अपने मस्तिष्क से ज्ञानी होने की बात निकाल फेंको। तुम्हारा अहंकार ही तुम्हारी मोक्ष प्राप्ति की राह में कांटा है। जाओ, अहंकार त्यागने का प्रयल करो।"

ऐसा कहकर महाकाश्यप सोचने लगे कि इतना अहंकार देवरात के मस्तिष्क में कहां से आया? शायद उनकी शिक्षा-दीक्षा में कोई कमी रह गई है। इसी सोच में मगन महाकाश्यप अपने कक्ष की ओर चल दिए। महाकाश्यप ने ध्यान ही न दिया कि देवरात उनके पीछे-पीछे चल रहा था। कक्ष में जाकर महाकाश्यप 'बौद्धसूत्र' नामक ग्रंथ पढ़ने लगे। देवरात पीछे खड़ा देख रहा था। महाकाश्यप की नजर देवरात पर पड़ी। उन्होंने देवरात को फटकार लगाई—"देवरात, तुम्हें तो मैंने जाने का आदेश दिया था। लेकिन तुम नहीं गए। मेरे कक्ष में भी बिना आज्ञा प्रवेश कर गए। इस अपराध के लिए तुम्हें दंड मिलेगा।"

दंड की बात सुनते ही देवरात ने महाकाश्यप के सम्मुख सिर झुका लिया और बोला—"क्षमा करें गुरुदेव, फिर ऐसी भूल न होगी। मैं तो मात्र जिज्ञासावश खिंचा चला आया।"

"स्मरण रहे, भविष्य में ऐसी गलती न हो।"–गुरु जी की चेतावनी सुन, देवरात कक्ष से बाहर आ गया। उसने सोचा कि चाहे कुछ हो, वह गुरु जी से अधिक ज्ञानवान बनेगा। इसके लिए उसे गुरु जी का वह ग्रंथ हथियाना पड़ेगा जिससे वह ज्ञान प्राप्त करते हैं।

रात को जब मठ में सभी भिक्षु सोए हुए थे, तब वह दबे पांव महाकाश्यप के कक्ष में गया और वह ग्रंथ चुरा लाया। उसने ग्रंथ को अपने बिस्तर के नीचे छिपाया और सो गया। उसने एक सपना देखा। तथागत उसके सामने खड़े हैं और उससे ज्ञान की भीख मांग रहे हैं। उसे लज्जा आई परंतु अभिमान ने लज्जा पर काबू पा लिया। वह निर्लज्ज हो बोला—'पूछो, क्या पूछना है?'

तथागत ने कहा—'निर्वाण प्राप्ति में घमंड आड़े आता है। घमंड को खत्म करने की कोई राह सुझाएं।'

देवरात ने बुद्ध की समस्या निवारण हेतु 'बौद्धसूत्र' नामक ग्रंथ खोला। वह दंग रह गया। ग्रंथ के प्रत्येक पृष्ठ पर लिखा था— 'सच्चा ज्ञान जीवन के अनुभवों से आता है, ग्रंथों से नहीं।' देवरात ने सामने देखा तो वहां कोई न था। भय से देवरात को पसीना आ गया। तभी उसकी आंख खुल गई।

दिन चढ़ आया था। सभी भिक्षु प्रार्थना स्थल पर जा चुके थे। देवरात ने बिस्तर टटोला पर ग्रंथ नदारद था। वह जान गया कि रात के सपने का मर्म क्या था। उसकी चोरी पकड़ी गई है, इस आशंका से वह बुरी तरह घबरा गया। उसकी आंखें भर आईं। वह अपने किए पर पछताने लगा। वह दौड़ा-दौड़ा प्रार्थना स्थल पर पहुंचा। प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी। महाकाश्यप अपने आसन पर बैठे भिक्षुओं को शिक्षा दे रहे थे। देवरात को आया देख, महाकाश्यप अपने
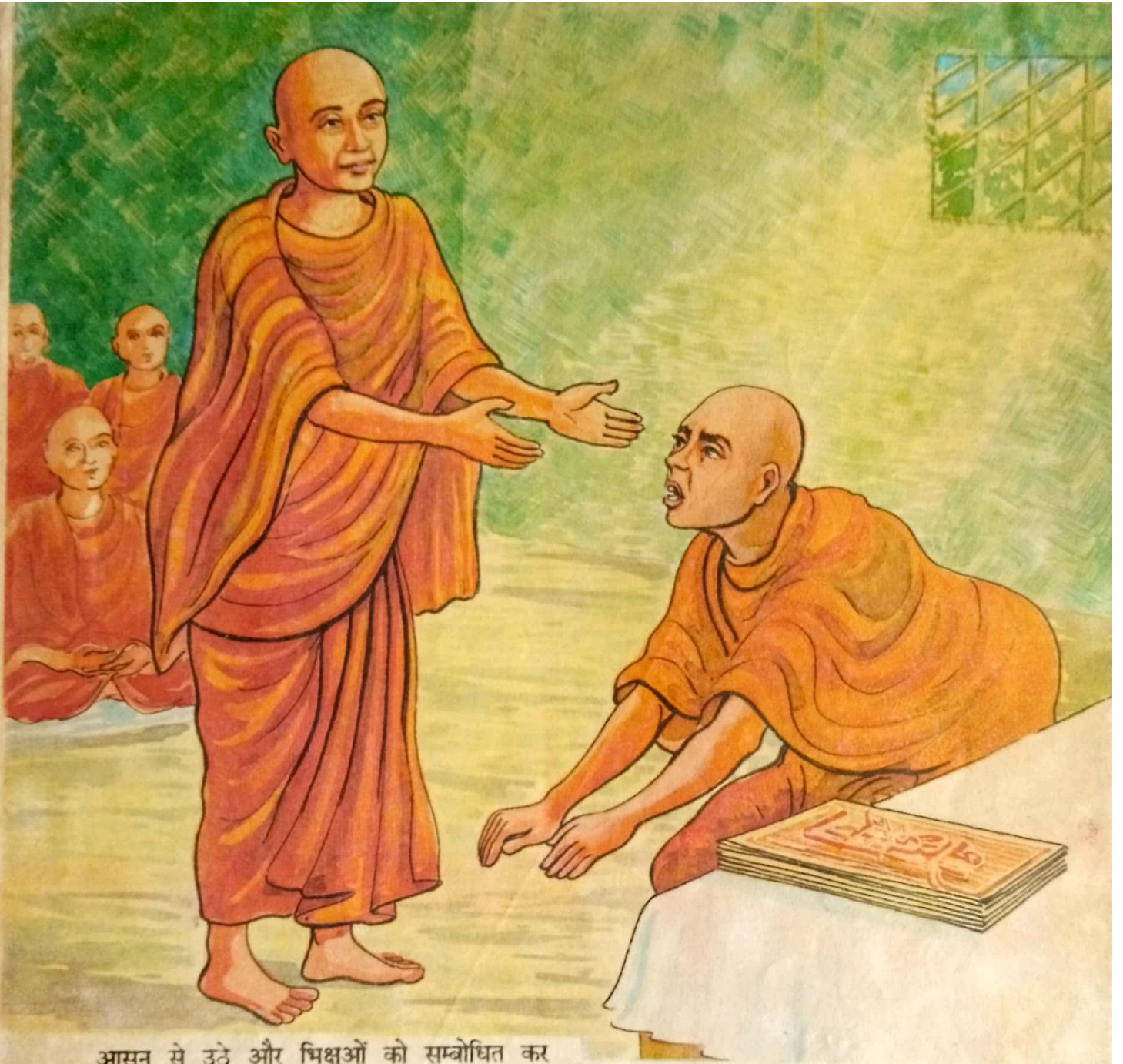
आसन से उठे और भिक्षुओं को सम्बोधित कर बोले—"आज मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे बीच में से एक भिक्षु इस जगत के रहस्य को पा गया है। आज से मेरे आसन पर वही बैठेगा। उसका नाम है देवरात। यह ग्रंथ 'बौद्धसूत्र' भी देवरात के सुपुर्द करता हूं। यह ग्रंथ समय-समय पर उसे रास्ता दिखाता रहेगा। आओ देवरात, आसन संभालो।"

देवरात पर मानो घड़ों पानी पड़ गया। वह बिलखकर बोला—"अब और लज्जित न करें गुरुदेव। मैं अज्ञानी कितना बड़ा अपराध कर बैठा। मैं इस आसन का नहीं, दंड का अधिकारी हूं। मुझे दंडित कीजिए।" कहते-कहते देवरात महाकाश्यप के पैरों पर गिर पड़ा। महाकाश्यप ने उसे उठाया और गले से लगाकर बोले—"वत्स, तुम्हारे आंसू इस बात का प्रमाण हैं कि तुमने अहंकार त्याग दिया है। अब तुम निर्दोष हो और फिर से सही मायनों में सच्चे भिक्षु बन गए हो। जाओ और अपना आसन ग्रहण करो।"

देवरात को मानो दूसरा जीवन मिला था। उसका मन निर्मल हो चुका था। ●

▲ भगवान जगन्नाथ मंदिर, पुरी
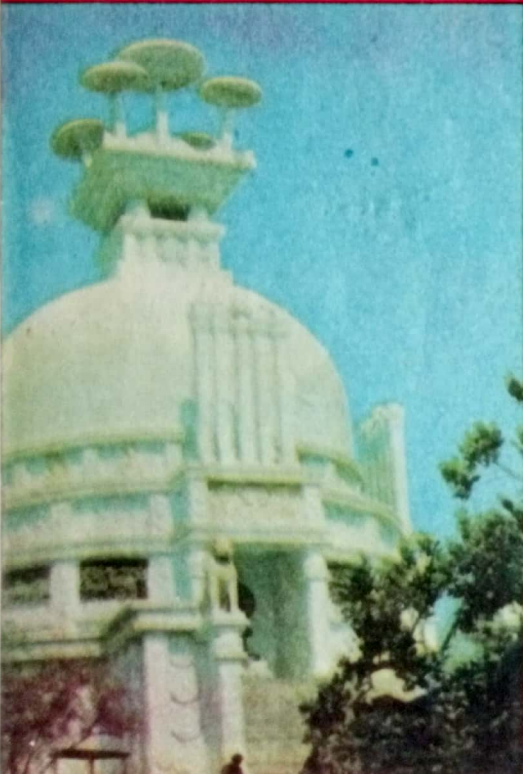
◀ धवलगिरि का शांति स्तूप, भुवनेश्वर

▲ ओडिसी नृत्य

▲ पिपली की कला

▲ सूर्य मंदिर का चक्र, कोणार्क
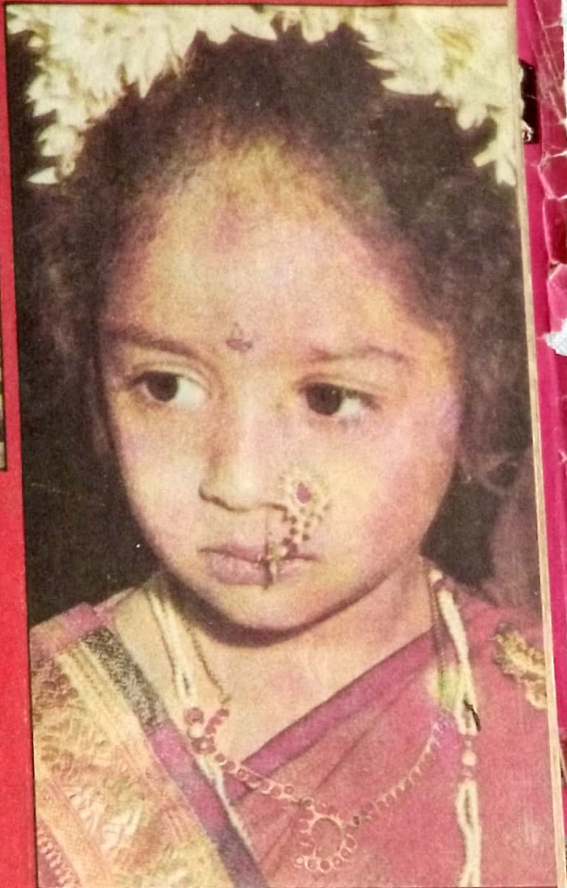
◀ बड़ी झील चिलिका —अनोखी शोभा

चित्र : देवव्रत बनर्जी, टी.पी. श्रीवास्तव

▼ सफेद बाघ
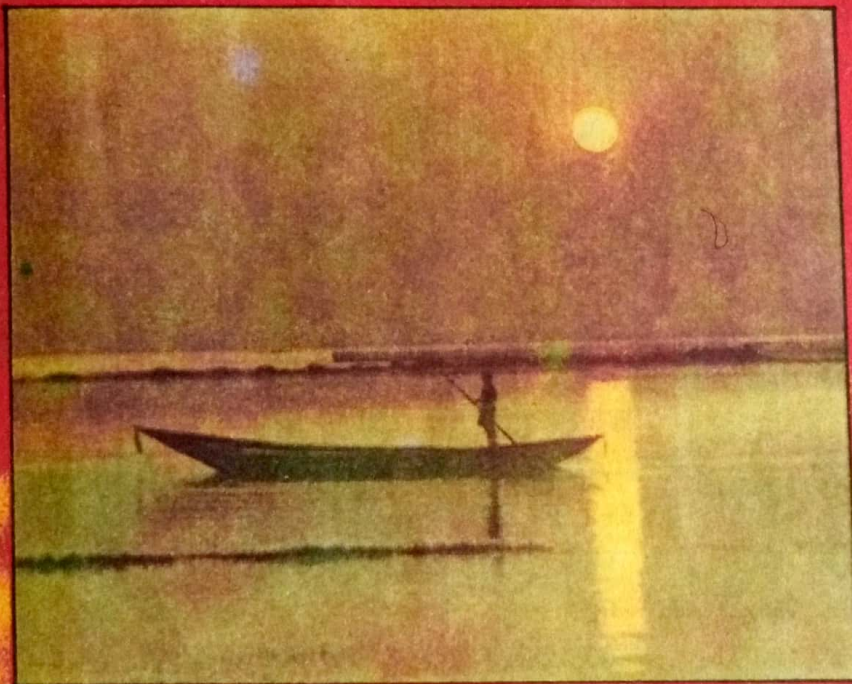
▼ नंदन कानन में घड़ियाल

# सिंहासन मुझे दो

—चुन्नीलाल मोहनलाल धामी

अवंती के राजा थे भर्तृहरि। उनके छोटे भाई का नाम था विक्रमादित्य। भाई उन्हें स्नेह से विक्रम कहते थे। भर्तृहरि के शासन काल में प्रजा सुखी थी। शत्रु अवंती की सीमाओं से दूर रहने में ही अपनी भलाई समझते थे।

लेकिन समय सदा एक-सा नहीं रहता। किसी बात पर दोनों भाइयों में मनमुटाव हो गया। द्वेष की आग को भड़काने वाले भी कई थे अवंती में। नतीजा यह हुआ कि भर्तृहरि ने विक्रम को राज्य छोड़कर चले जाने का आदेश दे दिया।

विक्रम तो चले गए, पर भर्तृहरि भी चैन से न रह सके। अंत में उन्हें पता चल ही गया कि विक्रम निर्दोष थे। उन्होंने छोटे भाई की खोज करवाई, पर कहीं पता न चला। विक्रम साधु बनकर घूमते फिर रहे थे।

फिर एक सुबह पता चला कि राजा भर्तृहरि महल में नहीं हैं। असल में छोटे भाई का बिछोह उनसे सहन न हुआ। उन्हें लगा झगड़े की जड़ राज-पाट ही है। बस, उन्होंने चुपचाप साधु का बाना धारण किया और चले गए।

अब तो अवंती सचमुच गहरे संकट में फंस गई। राजा भर्तृहरि और विक्रम दोनों ही चले गए थे। अगर ऐसे में कोई शत्रु आक्रमण कर देता, तो स्थिति और भी बिगड़ जाती। मंत्री, सेनापति तथा अन्य बड़े अधिकारियों ने विचार किया। सिंहासन का खाली रहना अवंती के लिए घातक था। निश्चय हुआ कि राजकुल के ही एक व्यक्ति को राजसिंहासन पर बैठा दिया जाए। जिसे चुना गया उसका नाम श्रीपति था।

श्रीपति अवंती का नया राजा बन गया। लेकिन एक दिन बाद ही राजमहल में उसका शव पाया गया। सब तरफ घबराहट फैल गई। यह कैसा संकट आया था अवंती पर! किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

असल में यह अग्निवैताल ने किया था। उसने स्वयं को अवंती के सूने सिंहासन का स्वामी मान लिया था। वह रोज रात को अदृश्य होकर राजसभा में जाकर राजसिंहासन पर बैठ जाता और दिन उगते ही वहां से चला जाता। जब श्रीपति राजा बना तो अग्निवैताल क्रोधित हो उठा और उसे यमलोक पहुंचा दिया।

फिर तो यही होने लगा। जो भी नया व्यक्ति अवंती के सिंहासन पर बैठता, अग्निवैताल उसी को मार डालता। उन्हीं दिनों अवंती में एक मुनि पधारे। मंत्री और सेनापति उनके पास गए। चरण छूकर अपनी समस्या बताई। मुनि ने कुछ देर विचार करने के बाद कहा—"एक साधु ही तुम्हारी समस्या दूर करेगा।"

"कौन साधु, वह हमें कहां मिलेगा?"—मंत्री ने उतावले स्वर में पूछा। लेकिन मुनि ने उसकी बात के उत्तर में केवल इतना कहा—"समय आने पर सब पता चल जाएगा।"

उन्हीं दिनों की बात है, विक्रम वन में कहीं जा रहे थे, तभी उन्हें एक व्यक्ति मिला। उसका नाम भट्टमात्र था। उसने विक्रम को अवंती के समाचार सुनाए। अवंती की दुर्दशा का समाचार सुन विक्रमादित्य परेशान हो उठे। आखिर उन्होंने निश्चय किया कि स्वयं अवंती जाकर, वहां की स्थिति की जानकारी लेनी चाहिए।

साधु विक्रमादित्य अवंती आ पहुंचे। एक उद्यान में टिक गए। जल्दी ही राज्य के बारे में उन्हें सब कुछ पता चल गया। दो दिन बाद मंत्री और सेनापति उनके दर्शन करने आए। इतने वर्षों के वनवास ने विक्रम में काफी परिवर्तन ला दिया था। दोनों ने विक्रमादित्य से प्रार्थना की। कहा—"आप अवंती को संकट से उबार लें, नहीं तो हम सब नष्ट हो जाएंगे।" विक्रमादित्य समझ गए कि इस समय अवंती को उनकी आवश्यकता है। उन्होंने कहा—"आप लोग निश्चिंत हो जाएं।"

विक्रमादित्य साधु के बाने में ही सिंहासन पर बैठ गए। उस दिन अवंती के नागरिकों ने चैन की सांस ली। लेकिन अभी अग्निपरीक्षा शेष थी। अगर रात भर वह जीवित रह जाएं, तभी कुछ कहा जा सकता था। रात हुई। महल के चारों ओर कड़ा पहरा था, लेकिन अपने कक्ष में विक्रमादित्य अकेले थे। वह सोच रहे थे—'आखिर वह कौन है, जो हर नए राजा का काल बनकर यहां आता है और कोई कुछ नहीं जान पाता।'

आधी रात बीती। विक्रमादित्य सावधान बैठे थे। तभी अट्टहास सुनाई दिया। विक्रमादित्य ने इधर-उधर देखा, पर कोई नजर नहीं आया। उन्होंने साहसपूर्वक कहा—"जो भी है, सामने आए।" अग्निवैताल प्रकट हो गया। उसका डरावना रूप देखकर एक बार तो विक्रम भी कांप गए। पर फिर संभलकर कहा—"क्या चाहते हो?"

"मैं अवंती का राजा अग्निवैताल हूं। मेरे सिंहासन पर जो भी बैठेगा, वही यमलोक चला जाएगा। लेकिन तुम एक साधु होकर राज-कक्ष में क्या कर रहे हो?"—अग्निवैताल ने कहा।

विक्रमादित्य ने उत्तर दिया—"मैं साधु वेश में क्षत्रिय हूं। तुमसे जरा भी भय नहीं है मुझे। मेरा नाम है विक्रमादित्य।"

अग्निवैताल ने विक्रमादित्य को बहुत डराया, पर वह अडिग रहे। दोनों का संघर्ष हुआ, तो भी विक्रमादित्य ने हार नहीं मानी। अग्निवैताल विक्रमादित्य की वीरता से प्रभावित हो गया। उसने कहा—"तुम अवंती के राजा बनने के अधिकारी हो। आज से मैं और तुम मित्र हुए। मैं अपनी चमत्कारिक शक्तियों से तुम्हारी सहायता करूंगा।" और फिर वैताल अदृश्य हो गया।

दिन निकला। राजकक्ष के बंद द्वार के बाहर भीड़ लगी थी। सड़कों पर नागरिक जमा थे—समाचार सुनने के लिए। सबके मन में भय समाया था। विक्रमादित्य कक्ष से बाहर आए, तो आकाश उनके जय-जयकार से गूंज उठा। अवंती को सचमुच एक वीर राजा मिल गया था।

अवंती के नागरिकों का उत्साह छलका पड़ रहा

था। राज्य पर आया भीषण संकट टल गया था। सूना राजसिंहासन भर गया था। उन्हें एक योग्य, वीर और न्यायी राजा मिल गया था। पूरे नगर में दीपमालिका हो रही थी। विक्रमादित्य ने मन ही मन प्रजा की सेवा का संकल्प ले लिया था।

विक्रमादित्य बड़ी कुशलता से अवंती का शासन चलाने लगे। जो शत्रु राजा आक्रमण के सपने संजो रहे थे, वे अब दया की याचना करने लगे। कुछ समय बाद मंत्री ने निवेदन किया—"महाराज, रनिवास सूना है, अब आपको विवाह करना चाहिए। प्रजा प्रसन्न होगी।"

"कुछ भी करने से पहले मैं अपने भाई से मिलना चाहता हूं। मेरी इच्छा उन्हें यहां लाने की है।"—विक्रमादित्य ने उत्तर दिया।

"वह तो राजपाट छोड़ संसार त्यागी बन चुके हैं। हमने उन्हें लाने का बहुत प्रयास किया था, किंतु सफल न हो सके।"—मंत्री ने निवेदन किया।

—"फिर भी मैं प्रयास करूंगा।" विक्रमादित्य ने कह तो दिया, पर भर्तृहरि का पता लगाना कठिन था। वह घोर वन में कहां रहकर तप कर रहे हैं, इस विषय में किसी को कुछ भी पता नहीं था। विक्रमादित्य इसी चिंता में थे कि उन्हें अग्निवैताल की याद आई। उन्होंने स्मरण किया तो अग्निवैताल तुरंत प्रकट हो गया।

"कहिए, क्या बात है ?"—वैताल ने पूछा।

विक्रमादित्य ने अपनी समस्या बताई तो वैताल ने कहा—"आपके बड़े भाई चित्रकूट के सघन वन प्रदेश में हैं।"

—"हम वहां कितने समय में पहुंच सकते हैं ?"

"आप आंखें बंद करें।"—वैताल ने कहा, तो विक्रमादित्य ने नेत्र मूंद लिए। अगले ही पल वैताल ने कहा—"महाराज, हम पहुंच गए।"

विक्रमादित्य ने नेत्र खोले। सब तरफ घनघोर वन, वन्य जीवों के स्वर। पल भर में जैसे किसी ने दृश्य परिवर्तन कर दिया था। वैताल ने अपनी चमत्कारिक शक्ति से विक्रम को तुरंत चित्रकूट पहुंचा दिया था।

भर्तृहरि एक गुफा में ध्यान लगाए बैठे थे। अपने छोटे भाई को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। कहा—"तुम्हें निर्वासित करना मेरी भूल थी। तुम अवंती के शासक बन गए हो, यह जानकर मुझे संतोष हुआ है।"

विक्रमादित्य ने उनसे अवंती चलने की प्रार्थना की, तो उन्होंने मना कर दिया। कहा—"कभी आऊंगा, अवंती की प्रजा से मिलने, लेकिन मैं सब कुछ त्याग चुका हूं, वहां ठहरूंगा नहीं। जाओ, न्यायपूर्वक शासन चलाओ, सुखी रहो।"

विक्रमादित्य अवंती लौट आए। उन्होंने सुना पीछे से नगर में कुछ विचित्र घटनाएं हुई हैं। चार व्यापारियों की बेटियां गायब हो गई हैं। बहुत खोज करने पर भी उनका कुछ पता न चल सका। रात में राजा सो न सके। सोचते रहे—'आखिर वह कौन है जिसने यह दुष्कर्म किया है ?' इसी सोच-विचार में उन्हें नींद आ गई। राजा ने एक स्वप्न देखा—वह वन में एक कुएं के पास खड़े हैं। कुएं में एक विशाल नाग फुफकार रहा है। नाग के मुंह में एक लड़की दबी हुई है। फिर उनकी नींद टूट गई। राजा ने मंत्री को बुलाकर विचित्र सपने के बारे में बताया। कहा—"हमें इस कुएं की खोज करनी चाहिए।"

"महाराज, सपने सत्य नहीं होते।"—मंत्री ने समझाना चाहा।

विक्रमादित्य ने कहा—"कोई-कोई सपना सच भी हो सकता है। मेरा मन कहता है, हम खोज करें तो कोई बात अवश्य पता चलेगी।" कुछ देर बाद वे दोनों घोड़ों पर बैठकर चल दिए। घोड़े दौड़ते हुए वन में जा पहुंचे। तभी राजा के कान में फुफकारने की आवाज आई—वैसी ही जैसी सपने में सुनाई पड़ी थी। उन्होंने उसी दिशा में घोड़ा दौड़ा दिया।

सचमुच सामने एक कुआं था, बिल्कुल वैसा जैसा विक्रमादित्य ने सपने में देखा था। घोड़े से उतरकर राजा कुएं के पास जा पहुंचे। झांककर देखा तो चौंक उठे। कुएं में एक भयानक सर्प लहरा रहा था। उसके मुंह में एक लड़की दबी हुई थी।

राजा ने तलवार हाथ में ली और कुएं की तरफ

बढ़े। मंत्री विक्रमादित्य की बात समझ गया। उसने पुकारा—"महाराज, कुएं में न कूदें। इसमें खतरा है।" विक्रमादित्य ने कहा—"मैं किसी भी खतरे से डरने वाला नहीं।" और मंत्री के रोकते-रोकते भी वह उस कुएं में कूद पड़े। लेकिन यह क्या! राजा नीचे नहीं गिरे, अधर में ही लटके रह गए।

राजा ने नीचे झांका तो उन्हें वह विशाल सर्प कहीं दिखाई न दिया। उसके स्थान पर एक पुरुष खड़ा नजर आया। वह मुसकरा रहा था। उसके पास ही एक लड़की भी खड़ी दिखाई दी। कुएं में तेज प्रकाश फैल गया। फिर विक्रमादित्य आराम से नीचे पहुंच गए। उन्होंने कहा—"कहां है वह सर्प?"

उस व्यक्ति ने कहा—"राजा विक्रमादित्य, मैं धीर नामक विद्याधर हूं और यह है मेरी बेटी कलावती। मैं बहुत समय से इसके लिए वर की खोज में भटक रहा था। हर तरह से विचार करने पर तुम ही इसके लिए उपयुक्त लगे। तुम्हें यहां तक बुलाने के लिए ही मैंने उस स्वप्न की रचना की थी। और इसीलिए चार लड़कियों को मंत्र बल से यहां लाकर छिपाया था।"

"वे कन्याएं कहां हैं?"—विक्रमादित्य ने पूछा।

—"वे सकुशल अपने-अपने घर पहुंच गई हैं। अब मैं चाहता हूं, आप मेरी बेटी से विवाह करें।" विक्रम और धीर विद्याधर की बेटी कलावती का विवाह हो गया। वे सुख से रहने लगे।

एक दिन विक्रमादित्य दरबार में बैठे थे, तभी एक शिल्पी वहां आया। उसने कहा—"महाराज की जय हो, मैं कश्मीर से आया हूं। मैंने आपके लिए एक बत्तीस पुतलियों वाला सिंहासन बनाया है। उसे बनाने में मुझे पूरे बारह वर्ष लगे हैं।"

विक्रमादित्य ने सिंहासन को दरबार में लाने की आज्ञा दी। पुतलियों वाला सिंहासन देखकर सब चकित रह गए। कमाल की कारीगरी थी। राजा ने शिल्पी को भरपूर इनाम दिया। उससे कहा—"आज से तुम अवंती के नागरिक हुए।"

राजा ने पुराने सिंहासन के स्थान पर बत्तीस पुतलियों वाला सिंहासन रखवा दिया। वह राज सिंहासन पर बैठे तो बत्तीसों पुतलियां हिलने लगीं। हर पुतली के चेहरे पर अलग-अलग भाव उभर आया। पुतलियों ने कहा—"महाराजा विक्रमादित्य की जय।" यह सुन दरबार तालियों से गूंज उठा

नए सिंहासन का समाचार चारों ओर फैलने लगा। दूर-दूर से लोग उस अद्‌भुत शिल्प को देखने के लिए आने लगे। उन दिनों सिंधु देश का राजा था शंखनाद। उसने दूत के हाथ एक पत्र भेजा—'मैं चाहता हूं, बत्तीस पुतलियों वाला अद्‌भुत सिंहासन मेरी राजसभा की शोभा बढ़ाए। पत्र पाते ही उसे मेरे पास भेजने की व्यवस्था करें, अन्यथा युद्ध झेलने के लिए तैयार रहें।'

पत्र पढ़कर विक्रमादित्य के नेत्र क्रोध से लाल हो गए। उन्होंने दूत से कहा—"अपने महाराज से मेरा प्रणाम कहना। उन्हें बताना कि मैं अपने द्वार पर आने वाले याचक की हर इच्छा पूरी करता हूं। उन्हें यह सिंहासन चाहिए तो याचक बनकर मेरे पास आएं। उनकी इच्छा पूरी हो जाएगी।"

पत्र का संदेश स्पष्ट था, और यह भी मालूम था कि सिंधुराज उत्तर में क्या करेगा। अवंती के सेनापति ने तुरंत तैयारियां शुरू कर दीं।

सिंधुराज की विशाल सेना ने अवंती पर आक्रमण किया। विक्रमादित्य की सेना भी पूरी तरह तैयार और चौकस थी। भयानक युद्ध छिड़ गया। खूब तलवारें बजीं, अंत में शंखनाद हार गया, राजा विक्रमादित्य जीत गए। बत्तीस पुतलियों वाला विचित्र सिंहासन अवंती के राजदरबार की शोभा बढ़ाता रहा।

महाराजा विक्रमादित्य की वीरगाथा पूरी दुनिया में फैल गई।

(प्रस्तुत : देवेन्द्रकुमार)

**चुन्नीलाल मोहनलाल धामी— गुजरात के प्रसिद्ध लेखक। अनेक उपन्यास व कहानियां लिखीं जिन्हें पाठकों ने बहुत पसंद किया। यहां उनके उपन्यास 'सिद्ध वैताल' की संक्षिप्त कथा दी जा रही है। —सं.**

Scanned with CamScanner

# कौन सी पोथी

— अनिलकुमार श्रीवास्तव

बुधई मिसिर राजापुर गांव के एक मामूली किसान थे। वह खेती के अलावा पंडिताई जजमानी भी कर लेते थे। उनका बड़ा लड़का सुकई मिसिर पढ़ने में मन नहीं लगाता था, मगर छोटा बेटा ललई मिसिर होनहार निकला। सुकई ने तो बड़े होकर पिता की खेती और जजमानी सम्भाल ली। ललई मिसिर ने दस बरस काशी में रहकर सब वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया। संस्कृत के बड़े-छोटे ग्रंथ पढ़कर वह प्रकांड पंडित बन गया। विद्या पूर्ण करके घर के लिए रवाना हुआ।

चलते-चलते खेतों के बीच, एक बरगद का पेड़ और उसकी छाया में बना कुआं दिखाई दिया। विश्राम और जलपान करने के लिए वह वहां रुक गया। उन्हें देख वहां एक चरवाहा आया। प्रणाम करके हाल-चाल पूछा। कहने लगा कि सामने रामपुर गांव है। वहां भी एक बहुत विद्वान पंडित जी रहते हैं। आज तक उन्हें शास्त्रार्थ में कोई नहीं जीत पाया। वहां के पंडित जी से शास्त्रार्थ करने के लिए तब ललई मिसिर चरवाहे के साथ रामपुर गांव की ओर चल दिए।

रामपुर के पंडित जी का नाम चतुरानन पांडे था। शास्त्रार्थ करना उनका एक शौक था और वह कभी हारे नहीं थे। ललई मिसिर का पहले उन्होंने स्वागत किया।

शाम हुई। सभा जुड़ी। चतुरानन पांडे बोले— "हमारे गांव में काशी से विद्या पढ़कर आए पंडित ललई मिसिर जी पधारे हैं। हमसे शास्त्रार्थ करना चाहते हैं। इन्हें शास्त्रार्थ के नियम व शर्तें बता दी जाएं।"

गांव के मुखिया ने कहा— "मिसिर जी ! अगर आप जीत गए तो पंडित चतुरानन पांडे की जमीन-जायदाद, धन-दौलत के मालिक आप हो जाएंगे। यदि चतुरानन पांडे जी से हार गए तो आपके कपड़े-लत्ते, पोथी-पत्रा, रुपया-पैसा सब चतुरानन पांडे जी ले लेंगे। मंजूर हो तो शास्त्रार्थ शुरू किया जाए।"

शास्त्रार्थ शुरू हो गया। चतुरानन पांडे ने पूछा— "अच्छा बताइए कि 'कुट्ट सर्र धम्म में' का अर्थ क्या है ?"

प्रश्न सुनकर ललई मिसिर के छक्के छूट गए। ऐसा विचित्र प्रश्न उन्होंने अपने जीवन में कभी नहीं सुना था। वह जवाब नहीं दे सके। हार गए, तो उनका सारा सामान चतुरानन पांडे का हो गया।

नंगे बदन सिर्फ गमछा लपेटे रात के अंधेरे में ललई मिसिर ने अपने घर में प्रवेश किया। उनकी हालत देखकर घरवाले परेशान हो उठे। गांववालों की समझ में भी कुछ न आया।

उन्होंने डाकू मिल जाने की बात कही मगर उनके बड़े भाई सुकई मिसिर को शक हो गया। कुरेदकर

पूछने पर ललई मिसिर रो पड़े। रोते-रोते उन्होंने रामपुर गांव में पंडित चतुरानन पांडे से हुए शास्त्रार्थ और उसमें हार जाने की बात बताई।

सुकई मिसिर ने उन्हें दिलासा दी। कहा— "मैं इसका बदला लूंगा।" दूसरे दिन अपने पिता की धोती का एक बड़ा-सा पग्गड़ सिर पर बांधा। घर के सब रद्दी कागज बटोर कर मोटा-सा पोथा तैयार कर सुकई मिसिर रामपुर की तरफ चल दिए।

उन्हें भी चरवाहा मिला। सारी बातचीत कर वह उस चरवाहे के साथ रामपुर पहुंचे और शास्त्रार्थ की चुनौती दी। फिर से शाम को गांव की सभा जुटी। शास्त्रार्थ की शर्तें दोहराई गईं। सुकई मिसिर ने भी शर्तें मान लीं। शास्त्रार्थ शुरू हुआ। चतुरानन पांडे ने वही प्रश्न किया— "'कुट्ट सर्र धम्म में' का अर्थ क्या है?" सुकई मिसिर ने कुछ चौंकने का अभिनय किया। झूठमूठ में पोथी के पन्ने उलटे-पलटे। फिर बोले— "यह प्रश्न बहुत गम्भीर है। गप्पोपनिषद में तृतीय अध्याय के दूसरे श्लोक से लेकर अट्ठाईसवें श्लोक तक यह आख्यान आया है। अहा हा। कितना सारगर्भित प्रश्न है आपका? 'कुट्ट सर्र धम्म में।'
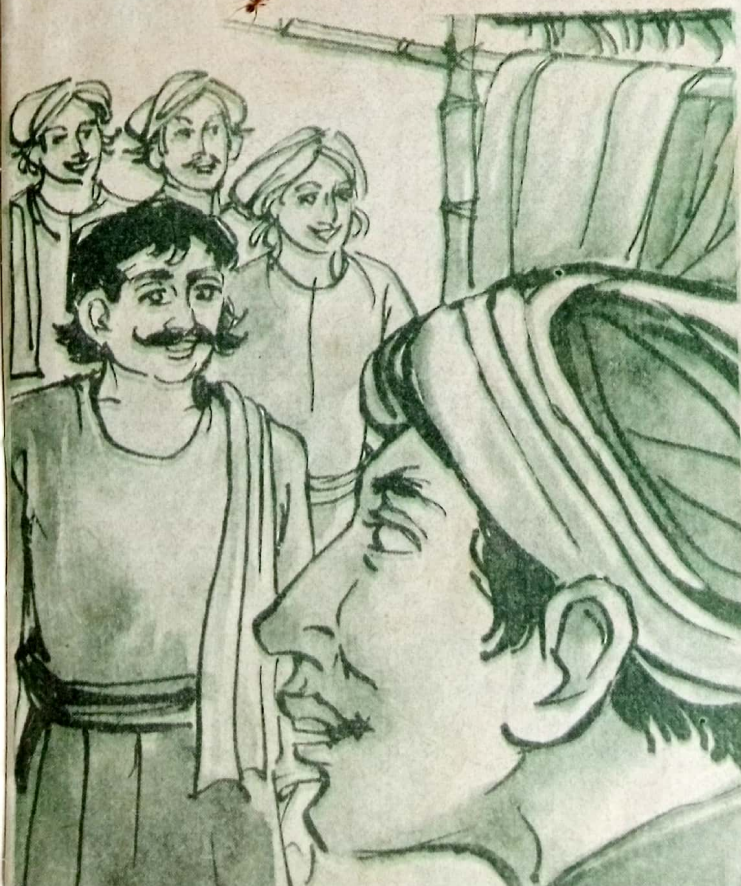
वाह-वाह! सच पूछिए तो पहली बार किसी विद्वान से शास्त्रार्थ करने का आनंद आ रहा है। सब लोग ध्यान से सुनिए – यह त्रेता युग की कथा है। मिथ्याग्राम नामक गांव में एक वृद्ध स्त्री रहा करती थी। उसकी कोई संतान नहीं थी। उसने एक बकरी का बच्चा घर में पाल रखा था। समय काटने के लिए वह साग-सब्जी अपने घर के कच्चे आंगन में लगा लेती थी। और कभी-कभी हाट में बेच आया करती थी। बकरी का बच्चा बड़ा होने लगा, तो उसकी साग-सब्जी की खेती को नुकसान पहुंचाने लगा। इससे बचने के लिए उसने घर के बाहर बकरी को बांधना शुरू कर दिया। अब गांव के कुत्ते उसे तंग करने लगे। आखिरकार बुढ़िया ने बकरी को फिर से आंगन में बांधना शुरू कर दिया। भाइयो! कथा समझ में आ रही है न?"

गांव वालों ने हामी भरी। वास्तव में उन्हें पंडित सुकई मिसिर की कहानी में बड़ा आनंद आ रहा था। सुकई फिर कहने लगे— "बुढ़िया के आंगन में लगी सारी साग-सब्जी बकरी खा गई। बची सिर्फ एक कद्दू की बेल। वह भी इसलिए बच गई क्योंकि छप्पर पर चढ़ी हुई थी।

"एक दिन बुढ़िया बाहर गई थी, तभी भूखी बकरी ने अपनी रस्सी चबा-चबा कर खा डाली। अब वह खूंटे से आजाद थी। उसने घूम-घूमकर सारे आंगन का मुआयना किया और कद्दू की बेल के पास आ पहुंची। फिर उसने उस कद्दू की बेल को काटा 'कुट्ट' उसे पकड़कर जोर से खींचा 'सर्र'। बेल खिंची तो छप्पर पर से कद्दू नीचे गिरा 'धम्म'। तब तक एक कद्दू बकरी की पीठ पर ही आ गिरा और बकरी मिमियाई मे ऽऽ। बस यही अर्थ है इस श्लोक 'कुट्ट सर्र धम्म मे' का।"

सारे गांव वाले अब सुकई मिसिर की विद्वत्ता से पूरी तरह से प्रभावित हो चुके थे। उन्हें कंधे पर बिठा लिया गया। उनका जयकार होने लगा। बेचारे चतुरानन पांडे! बेघर-बार होकर गांव छोड़कर चले गए।

## बादल

घिर-घिरकर आते हैं बादल
गरज-गरज जाते हैं बादल,
भूरे बादल, काले बादल
बरस रहे मतवाले बादल।
प्यारा लगता, टप-टप करती
बूंदों का संगीत सलोना,
बौछारों से भीग रहा है
घर-आंगन का कोना-कोना।
खोल रहे हैं, वर्षा वाले
आसमान के ताले बादल !

पुरवाई झोंके खाती है
हरियाली भी लहराती है,
झूम-झूमकर सारी धरती
लगता है जैसे गाती है।
फसलों के आंचल फहराते
देख नए जल वाले बादल,
बरस रहे मतवाले बादल
भूरे बादल, काले बादल।

—बाबूलाल शर्मा प्रेम

## मेरे पापा

मेरे पापा आएंगे,
साथ बहुत-कुछ लाएंगे
मेरे पापा आएंगे।

केले, सेब, मुसंबी, आम
और न जाने क्या-क्या नाम,
बरफी, पेड़े, रसगुल्ले
ज्यों मिठाइयों के मेले।
हम देख-देख इठलाएंगे !
लाएंगे सुघड़ खिलौने खूब
अच्छे-से और सलोने खूब,
बढ़िया जूते, बढ़िया फ्राक
लाएंगे रंग-रंग की चाक !
वह जादू-सा दिखलाएंगे !

मैं ता-ता-थइया नाचूंगी
घर-घर जाकर बतलाऊंगी,
सब दौड़े-दौड़े आएंगे
वह अपना हाल सुनाएंगे।
हम खुशियों से घिर जाएंगे !

—कमलेश चन्द्राकर

## पूछेंगे नानी से

झर-झर पानी आ बरसाओ
बादल जी,
पानी लाओ, पानी लाओ
बादल जी।

गुड्डा प्यासा, गुड़िया प्यासी
प्यासी-प्यासी है गैया,
पीपल छैयां प्यासी-प्यासी
प्यासी मरती है बुढ़िया।
आओ-आओ, आ भी जाओ
बादल जी।

कोयल प्यासी, कौआ प्यासा
प्यासी-प्यासी चिड़िया है,
मेढक प्यासा, कछुआ प्यासा
प्यासी सोन-मछरिया है।
झूम-झूम, इठलाकर आओ
बादल जी।

तुम आओ तो छप-छप खेलें
बहते ठंडे पानी से,
कित्ता पानी, कित्ता पानी
पूछेंगे हम नानी से।
छत पर छाओ, झूलो, गाओ
बादल जी।

—रामसेवक शर्मा

दो कोरियाई कविताएं

—यून सॅक जूंग

## झरने में

भीतर वहां पहाड़ों पर
नन्हे से इक झरने में,
जाने आता कौन वहां पर
पीने पानी झरने में !

सुबह सवेरे नन्हे खरहे
जाग, मसलते हुए आंख वे,
मुंह अपना धोने आते हैं
पीकर पानी वे जाते हैं।

कितना साफ, साफ है कितना
पानी नन्हे झरने का,
जाने आता कौन वहां पर
पीने पानी झरने का ?

रात चांदनी, सभी हिरणियां
छुप्पम-छुप्पा खेल खेलतीं,
लगे प्यास तो दौड़ी आतीं
पीकर पानी झट वे जातीं।

## देश बड़ा-सा

घर का काम मिला है मुझको
नक्शे में दुनिया दिखलाऊं,
रात बैठकर मेहनत की पर
रहा अधूरा, क्या बतलाऊं।

देश न हो जो तेरा-मेरा
राष्ट्र न हो जो तेरा-मेरा
हो बस दुनिया देश बड़ा-सा,
तब होगा आसान बनाना
नक्शे में दुनिया दिखलाना।
(प्यारी सी दुनिया दिखलाना !)

(अनुवाद : दिविक रमेश)

# बन गया जहाज

—प्रेमनारायण गौड़

बहुत पहले दक्षिण भारत में माधोसिंह नामक एक राजा राज्य करता था। उसके पास पानी का एक बहुत बड़ा जहाज था। इस जहाज पर चढ़कर वह देश-विदेश की यात्रा करता और अपनी जानकारी बढ़ाया करता था। अचानक एक दिन जब वह जहाज पर यात्रा कर रहा था, भयानक तूफान आने के कारण उसका जहाज समुद्र में डूब गया। राजा किसी तरह तैरता हुआ किनारे पर आ गया किंतु जहाज डूबने से माधोसिंह का घूमना-फिरना असम्भव हो गया। इससे वह बहुत उदास रहने लगा।

एक दिन उसने सभी नगर वासियों को बुलाकर कहा—"मेरा जहाज पानी में डूब गया है। इससे मुझे देश-विदेश की यात्रा में बड़ी कठिनाई हो रही है। अतः मुझे वैसे ही एक दूसरे जहाज की आवश्यकता है। इसलिए जो भी मुझे जल्दी से जल्दी वैसा ही जहाज बनाकर देगा, उसे मैं पुरस्कार दूंगा।" इतना कहकर राजा अपने महल में चला गया।

किंतु राजा के लिए कोई भी जहाज बनाने को तैयार न हो सका। सब अच्छी तरह जानते थे कि यह काम आसान नहीं है। लेकिन उनमें से तीन भाई ऐसे थे, जिनके मन में दृढ़ संकल्प था। वे उस जहाज के निर्माण के लिए अलग-अलग तैयारी करने लगे। वे अपना राज एक-दूसरे को बिल्कुल नहीं बताना चाहते थे। इसलिए उन्होंने एक-दूसरे से इस बारे में कुछ नहीं कहा। सबसे पहले बड़ा भाई अकेला ही जंगल में अच्छी लकड़ी की तलाश में पहुंचा, लेकिन उसे वहां कहीं भी जहाज बनाने लायक अच्छी लकड़ी न दिखाई दी। अंत में वहीं थककर एक पेड़ के नीचे जा बैठा। सहसा उसी समय उस पेड़ से उतरकर उसके सामने एक कौवा आ खड़ा हुआ। वास्तव में वह कौवा एक जादूगर था। उसे किसी परी ने शाप देकर कौवा बना दिया था। शाप देते हुए परी ने कहा था—"यदि तुम कोई तीन परोपकार के काम करोगे, तो तुम अपनी असली सूरत में आ जाओगे।"

कौवे ने समझ लिया कि यह आदमी जरूर किसी मुसीबत में है, इसकी मदद करनी चाहिए। यह सोचकर उसने बड़े भाई के पास जाकर पूछा—"दोस्त, तुम ऐसे घने जंगल में क्या करने आए हो?"

बड़ा भाई यह सुनकर कुछ देर के लिए चुप हो गया। वह अपना भेद किसी को नहीं बताना चाहता था। फिर कुछ देर चुप रहकर वह अपना भेद छिपाता हुआ बोला—"मैं एक ऐसे पेड़ की तलाश में हूं जिसकी लकड़ियों से मैं सुंदर बेलन बनाकर बाजार में बेच सकूं और कुछ पैसे कमा सकूं।"

कौवे ने सोचा कि वह उसे ऐसे पेड़ के बारे में अवश्य बताएगा, क्योंकि वह उसके लिए पहला परोपकार का काम होगा। इसलिए वह तुरंत एक घने पेड़ की ओर इशारा करता हुआ बोला—"उस पेड़ की लकड़ियां तुम्हारे काम के लिए अच्छी रहेंगी।"

बड़े भाई ने कौवे को टालने की गरज से जैसे ही पेड़ पर अपनी कुल्हाड़ी चलाई, वैसे ही यह देखकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही कि उस पेड़ की हर डाली से मोटे-मोटे बेलन अपने आप गिरने लगे।

किंतु इससे बड़ा भाई भयभीत हो उठा। वह उसे कोई भुतहा पेड़ समझकर भाग निकला। उस समय वह अपनी कुल्हाड़ी लेना भी भूल गया।

उधर मंझला भाई भी किसी अच्छे पेड़ की तलाश में चुपचाप घर से निकलकर उसी जंगल में जा पहुंचा। उसने भी जैसे ही एक पेड़ के नीचे बैठकर आराम करना चाहा, वैसे ही वही कौवा पास आकर बोला—"दोस्त, तुम इस जंगल में कैसे आ गए ?"

मंझला भाई भी बड़े भाई की तरह अपने मन की बात छिपाते हुए बोला—"मुझे कुछ लकड़ियों के चम्मच तैयार करने हैं। उसके लिए किसी मजबूत पेड़ की तलाश में यहां तक आ गया हूं।"

कौवे ने सोचा—'इस समय मुझे दूसरे परोपकार का मौका मिला है।' इसलिए वह तुरंत एक पेड़ की ओर इशारा करता हुआ बोला—"उस पेड़ की लकड़ियां तुम्हारे चम्मच बनाने के लिए अच्छी रहेंगी।"

मंझले भाई ने जैसे ही उस पेड़ को काटने के लिए कुल्हाड़ी चलाई, वैसे ही उसकी डालियों से लकड़ियों के बने हुए चम्मच अपने आप गिरने लगे। यह देखकर मंझला भाई एकदम भौंचक्का रह गया। वह भी उसे भुतहा पेड़ समझकर वहां से भाग निकला।

संयोगवश इसी समय छोटा भाई भी जहाज के लिए लकड़ी की तलाश में उस जंगल में आ पहुंचा। वहां पहुंचकर वह एक पेड़ के नीचे बैठा ही था कि वही कौवा उसके सामने पहुंचकर बोला—"दोस्त, तुम इस जंगल में क्या करने आए हो ?"

छोटे भाई के मन में छल-कपट बिल्कुल नहीं था, इसलिए उसने भोलेपन से कहा—"मुझे राजा के लिए जहाज बनाना है, इसके लिए मजबूत लकड़ियों की तलाश है।"

कौवे को तीसरी बार परोपकार करने का मौका मिला था। इसलिए उसने झट नदी किनारे खड़े हुए एक सूखे पेड़ की ओर इशारा करते हुए छोटे भाई से कहा—"दोस्त, तुम्हारे लिए उस पेड़ की लकड़ियां अच्छी रहेंगी।"

छोटे भाई ने उस पेड़ के निकट पहुंचकर जैसे ही कुल्हाड़ी चलाई, वैसे ही उस पेड़ से बड़े-बड़े पटरे, सीढ़ियां, मस्तूल आदि अपने आप गिरने लगे। यही नहीं, देखते ही देखते वे आपस में जुड़ते हुए जहाज का रूप धारण करने लगे।

फिर क्या था ! जहाज के तैयार होने में अधिक देर न लगी। उस जहाज के तैयार होते ही छोटे भाई की प्रसन्नता और आश्चर्य की सीमा न रही। इस समय कौवा फिर उसके पास आकर बोला—"दोस्त, तुम इस जहाज को पाकर प्रसन्न तो हो न !"

"हां, मुझे तो संतोष है।"—छोटे भाई ने कहा—"लेकिन मुझे इस जहाज को राजा को भी दिखाना है। यदि उन्होंने भी इसे पसंद कर लिया तो मेरी मेहनत सार्थक होगी।"

इतना कहकर वह सीधे राज दरबार में जा पहुंचा और राजा को जहाज तैयार होने की बात कह सुनाई। यह सुनकर राजा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने पूछा—"क्या सचमुच तुमने जहाज का निर्माण कर लिया है ? मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।"

छोटे भाई ने अब राजा से अपने साथ नदी किनारे तक चलने की विनती की। राजा तैयार हो गया। उसने वहां पहुंचकर देखा, नदी की बीच धार में पहले जैसा ही एक जहाज खड़ा था। यह देखकर राजा की प्रसन्नता की सीमा न रही। उसने छोटे भाई को अनेक पुरस्कार देते हुए अपने दरबार में रख लिया।

सहसा उसी समय छोटे भाई की मुलाकात एक जादूगर से हुई। उसने कहा—"दोस्त, मैं वही कौवा हूं, जिसने इस काम में तुम्हारी मदद की थी। असल में मेरे जादू से चिढ़कर एक परी ने शाप देकर मुझे कौवा बना दिया था।"

इसके बाद उसने उसे अपने शाप मुक्त होने की पूरी कहानी सुनाते हुए कहा—"दोस्त, मुझे तो अपने तीन परोपकार के कारण उस शाप से मुक्ति मिल गई है। लेकिन यह भी समझ लो कि तुम्हें जो सफलता मिली है, वह तुम्हारे नेक इरादों की ही जीत है।"

इतना कहकर जादूगर वहां से चला गया।●

# टूटा कलश

शंकरलाल व्यापारी थे। राजू पुराना नौकर था। वह उसे बहुत मानते। सारे काम करवाते।

तिजोरी से पैसे ला।

अच्छा मालिक!

शंकरलाल की पत्नी को इस तरह राजू का सिर चढ़ना पसंद नहीं था। उसने उसे निकाल दिया।

खुद को न जाने क्या समझता है। जा निकल जा।
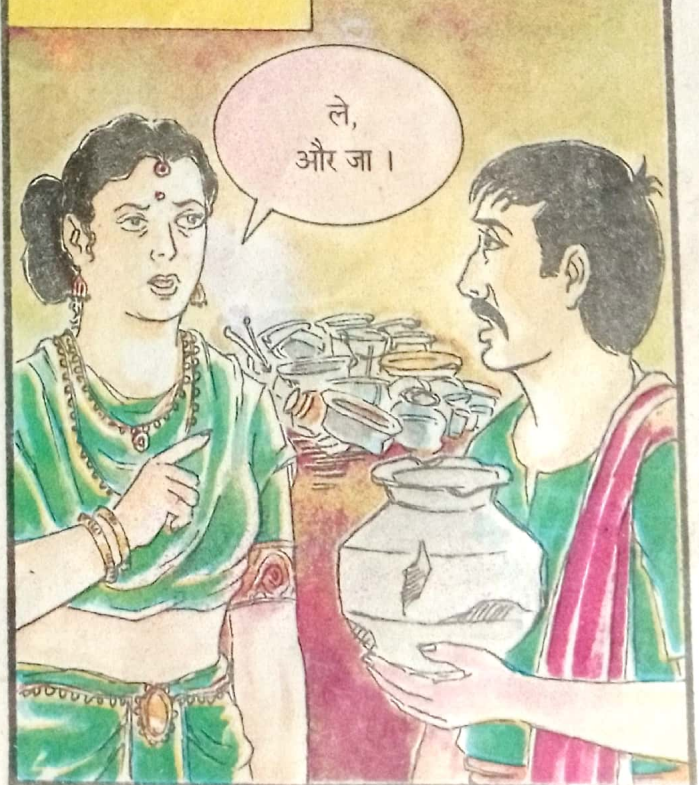
संगी-साथी उसे बाहर तक छोड़ने आए । दिलासा देने लगे ।
एक दिन वापस आओगे ।
कभी नहीं । मुंह तक नहीं देखूंगा ।

घर में पत्नी और बच्चे इंतजार में थे । पत्नी ने पकवान बनाए थे ।
देखो, बापू आ रहे हैं ।

घर पहुंच उसने पत्नी को पूरी बात बताई । वह रोने लगी ।
नौकरी गई ।
भगवान, हमारा क्या होगा ?

बहुत दिन तक काम न मिला । खेतों पर पक्षी उड़ाने का काम मिला ।

राजू को यह पसंद नहीं था। पत्नी ने उदासी का कारण पूछा।
काम मिल गया। तब भी...
पक्षियों के मुंह से दाना छीनना बुरा है।

पत्नी को एक साधु मिले।
प्रणाम महाराज।
सुखी रहो। जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा।
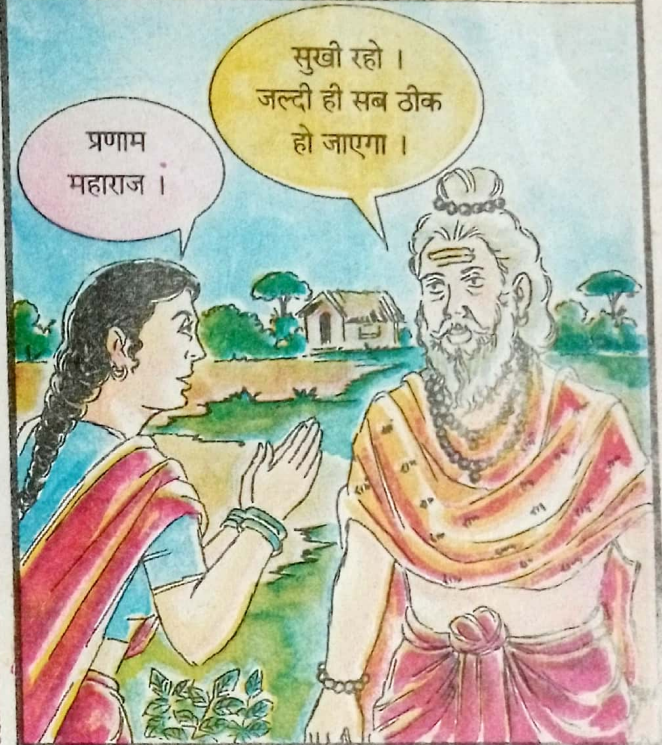
शंकरलाल बीमार थे। राजू को याद करते।
राजू का कितना सहारा था।
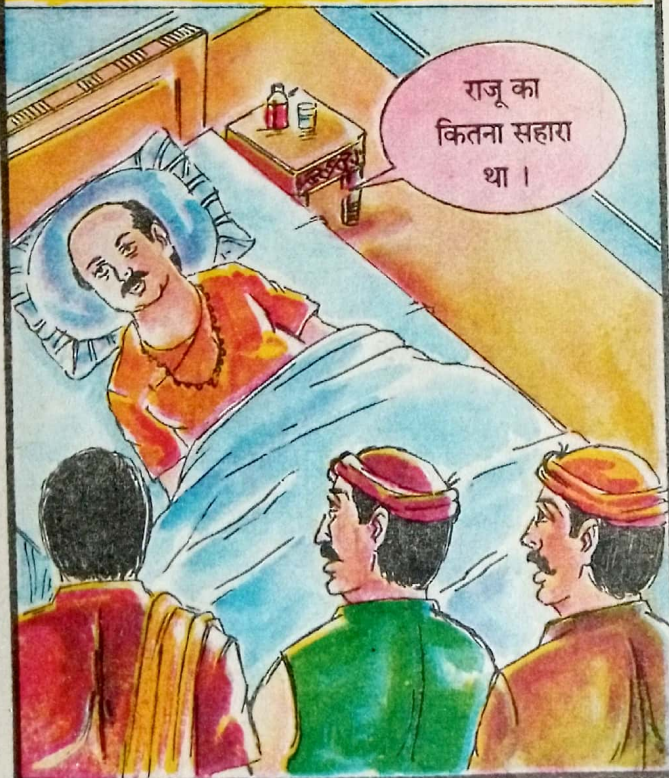
राजू बीमार मालिक को देखना चाहता था। मगर घर के अंदर जाने की हिम्मत न पड़ी।
कभी मालिक के दर्शन नहीं कर पाऊंगा।
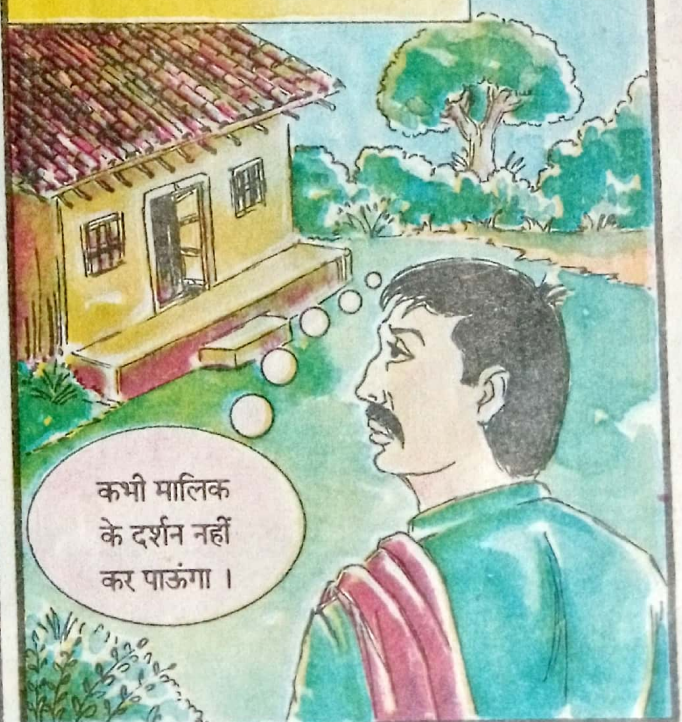
घर आकर वह जंग लगे कलश को साफ करने लगा।
अरे, यह तो सफेद निकल रहा है।
चांदी का है।
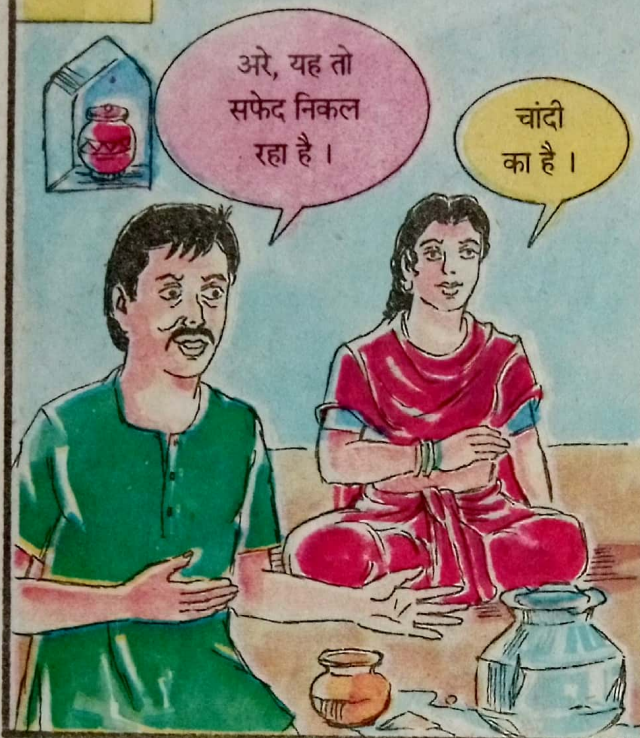
वह कलश उठा चल दिया। पत्नी पुकारती रह गई।
कीमती कलश कहां लिए जा रहे हो ?

शंकरलाल उसे देख बहुत खुश हुए। सारी बात पता चली तो बोले—
चांदी का है, यह तो अब पता चला है।
यह तो तुम्हारा ही है।
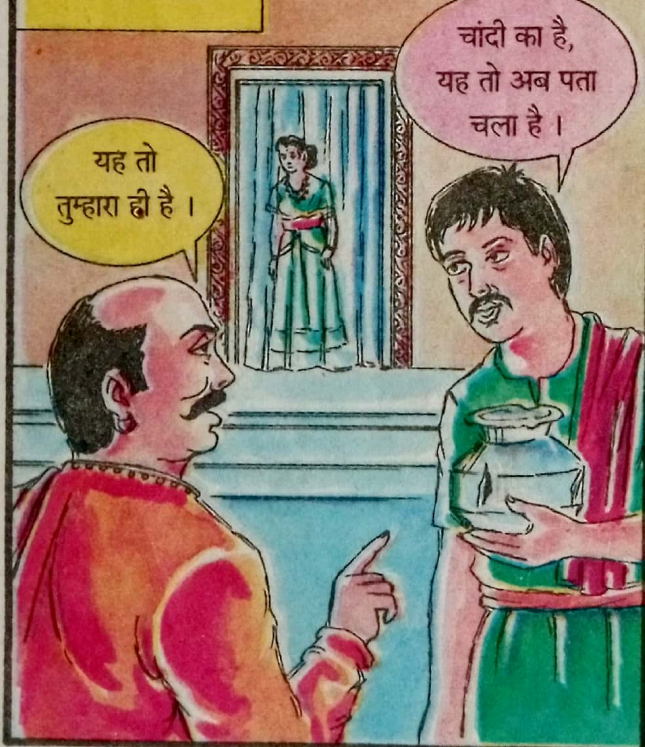
पर्दे के पीछे से व्यापारी की पत्नी निकली। अपने किए पर पछता रही थी।
तुम्हारी बहन का घर है। यहीं रहो।
कलश ईमानदारी का पुरस्कार है।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

—बच्चों का अखबार—

# नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ६५ रुपए
दो वर्ष : १२५ रुपए
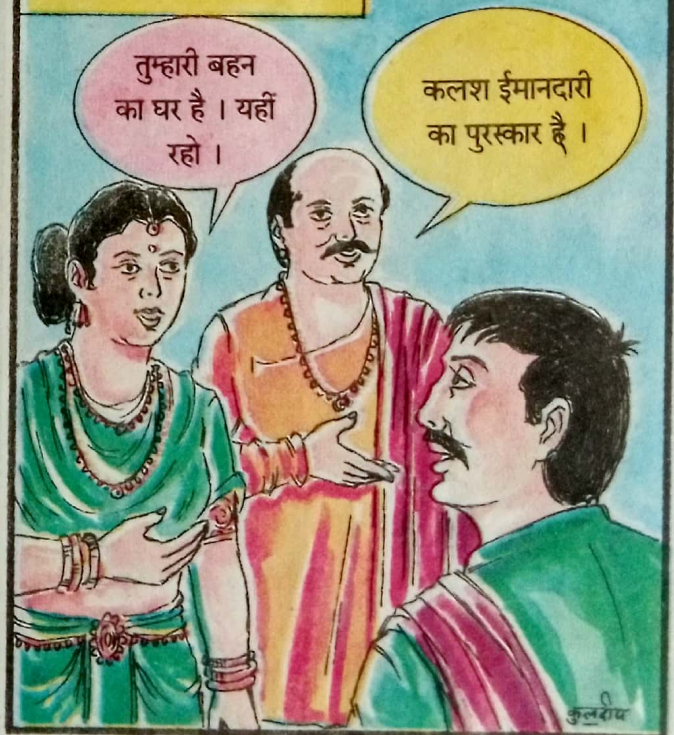
वर्ष : ३१ अंक : १० अगस्त '९५, नई दिल्ली; श्रावण-भाद्रपद, शक सं. १९१७

## हवा में उड़ते जाएं दूर गगन में

**नई दिल्ली। जहाज आसमान में एक परिंदे की तरह ऊंचा और ऊंचा उड़ता चला जाता है। फिर ग्रुप कप्तान अरुण दत्तात्रेय कारंदीकर के एक इशारे पर अपने डैने समेटता नीचे उतर आता है।**

भारतीय वायुसेना के ग्रुप कप्तान कारंदीकर अब तक तेरह हजार घंटे विमान उड़ा चुके हैं। यह एक रिकार्ड है। सत्ताइस वर्ष की सेवा में कभी कोई दुर्घटना भी नहीं हुई। जबकि बहुत बार

उन्हें आंधी-तूफान में विमान उड़ाना पड़ा है। १९७१ के युद्ध के दौरान साथी पायलट के बीमार हो जाने पर, अकेले ही विमान का नियंत्रण संभालना पड़ा था।

सिर्फ देश के ही नहीं विदेश के महत्वपूर्ण नेताओं को भी कारंदीकर विमान यात्रा करा चुके हैं। उड़ान के दौरान कई बार उनके सामने कठिन चुनौतियां आईं, वह परीक्षा में सफल रहे। एक बार श्रीमती इंदिरा गांधी ने पायलटों की भरी सभा में उनकी तारीफ की थी।

कप्तान कारंदीकर को वायुसेना पदक के अलावा वायुसेना अध्यक्ष के प्रशंसा पत्र भी मिले हैं। सिर्फ देश में ही नहीं विदेशों में भी वह महत्वपूर्ण व्यक्तियों को विमान में ले गए हैं। 'अगर कारंदीकर विमान काकपिट में मौजूद हैं। तो फिर कोई डर नहीं'— यह वाक्य उनके बारे में कई बार सुनने को मिलता है। ग्रुप कप्तान कारंदीकर का कहना है— "मुझे विमानों से प्यार है। जीवन के अंतिम क्षण तक मैं विमान उड़ाते रहना चाहता हूं।"

## नन्ही का करिश्मा

पटना। सुलेखा हशमत की उम्र है तीन साल, आठ महीने। उसने अपने ऊपर से पूरी की पूरी मारुति गुजर जाने दी। फिर वह हंसती हुई उठ खड़ी हुई। वह बिल्कुल भली-चंगी थी।

## पाठ्य पुस्तकों से हटकर पढ़ाएं

नई दिल्ली। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री माधव राव सिंधिया का कहना है कि सरकार बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर बहुत जोर दे रही है। प्राथमिक विद्यालयों पर काफी धन खर्च किया जा रहा है। बच्चे अपनी पढ़ाई का आनंद ले सकें, इसके लिए उन्हें पाठ्य पुस्तकों से अलग हटकर पढ़ाना होगा। श्री सिंधिया बालभवन में लगी प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे थे।

## पड़दादी

बम्बई। राधाबाई ११० वर्ष की हैं। चार पीढ़ियों का सुख देख चुकी हैं। उनके माता-पिता की मृत्यु बचपन में हो गई थी। उन्हें उनकी दादी ने पाला था। एक सौ नौ वर्ष की उम्र तक वह अपने खेतों पर काम करती रही हैं। कभी बीमार होकर अस्पताल नहीं गईं। उनकी सबसे छोटी बेटी सत्तर साल की है और बेटा नब्बे साल का। आजकल वह अपने नाती विष्णु के साथ रहती हैं।

## छप्पन भोग

नई दिल्ली। विदेश में रहकर भी अब आप मजेदार जलेबी और जायकेदार रसगुल्लों का आनंद ले सकेंगे। दुबई में एक भारतीय मिष्ठान परियोजना लगाई जा रही है। इसमें तरह-तरह की मिठाइयां बनाई जाएंगी। इन्हें विदेशों को भेजा जाएगा। मिठाइयां बेचने वाली कंपनी का नाम है—'छप्पन भोग।'

## सस्ती सब्जियां

बंगलौर। बैंगन, आलू, टमाटर, तोरई, लौकी किस भाव मिलेंगे ? सिर्फ दो रुपए किलो। ग्रीन हारवेस्ट नामक कम्पनी ने आम जनता की सुविधा के लिए यह योजना शुरू की है। अगर किसी आदमी के पास 'ग्रीन वैल्यू कार्ड' है तो वह कम्पनी की दुकानों से दो रुपए किलो कोई भी सब्जी खरीद सकता है। 'ग्रीन वैल्यू कार्ड' प्राप्त करने के लिए एक हजार रुपए जमा कराने होंगे।



पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

—बच्चों का अखबार—
# नंदन बाल समाचार

Ashish Agarwal

अभाव पर विजय पाना ही सबसे बड़ी सफलता है।—शरतचंद्र

## एक अंक की बात

देश को आजाद हुए अड़तालीस बरस हो रहे हैं। आजादी के समय उमंग थी, उत्साह था। कहा जाता था कि देशवासी बराबर होंगे, सबको न्याय मिलेगा। आजाद भारत में कुछ तो हुआ, लेकिन बहुत कुछ नहीं हो पाया। इन दिनों सौ में से चार अंक पाने वाले को डाक्टरी में दाखिला मिल जाता है। इंजीनियरी में नौ सौ में से एक अंक मिला, उसे दाखिला दे दिया गया। किशोर और युवा पूछते हैं कि आजादी का यही मतलब है क्या ? प्रवेश परीक्षा में तिहत्तर प्रतिशत अंक पाने वाले दाखिला नहीं पाते। जिन्हें कुछ नहीं आता, उन्हें डाक्टर बनाकर क्या परिणाम निकलेगा। कई होनहार जान दे रहे हैं क्योंकि उन्हें दाखिला नहीं मिल पाता। बहुत-से योग्य बच्चे निराश होकर विदेश चले जाते हैं, कभी न लौटने के लिए।

वोट और कोटे के खेल ने सब गड़बड़ा रखा है। जो कुछ आज हो रहा है, उसमें हम ढूंढ़ते रह जाएंगे कि आजादी कहां गई। इतना समय गुजरने पर भी पिछड़े कितना आगे बढ़े हैं। जात-पात और भेदभाव नए सिरे से उभर रहे हैं। ऐसे में गांधी जी की याद आती है। हर बच्चे को उनकी जीवनी दी जाए तो शायद सही सोच उभरे।

### रतन शर्मा स्मृति पुरस्कार

नई दिल्ली। प्रति वर्ष हिंदी में बच्चों की मौलिक पुस्तक (कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि) पर ५००१ रुपए का पुरस्कार दिया जाएगा। पिछले चार बरसों में प्रकाशित पुस्तकों में से पहले पुरस्कार के लिए चुनाव होगा।

### गर्मी में छुट्टियां

नई दिल्ली। तेज गर्मी और उस पर रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों की टिकट खिड़कियों पर भारी भीड़। आजकल यह सवाल पूछा जाने लगा है कि गर्मी के दिनों में स्कूल-कालेजों की छुट्टियां की जाएं या नहीं। कुछ लोगों का कहना है कि गर्मी की छुट्टियां अंग्रेजों ने शुरू की थीं। वे यहां की गर्मी बर्दाश्त नहीं कर पाते थे और ब्रिटेन चले जाते थे। इसलिए हमें अपनी-अपनी जगह के मौसम के हिसाब से छुट्टी करनी चाहिए।

### रुको आराम करो

टोकियो। वाहन चलाते वक्त चालक को ध्यान ही नहीं रहता कि वह थक गया है। ऐसे में दुर्घटना हो जाती है। अब एक ऐसा यंत्र बनाया गया है जो चालक की थकान को माप सकता है। हिदायत दे सकता है कि रुको, यह आराम का समय है।

---

तीन सौ वर्ष पहले नाटिंघम नामक जलपोत अमरीका में बून द्वीप के पास डूब गया था। हाल ही में गोताखोरों ने उस पर लगी नौ तोपें बाहर निकाल ली है।

### पाठकों से

'बच्चों के अखबार' में हम बच्चों के चित्र छापना चाहते हैं। नाटक, नृत्य, खेल-कूद तथा समारोह के अच्छे चित्र भेजिए। जो चित्र छपेंगे उन पर इनाम मिलेगा।

### अनोखे चोर

जमशेदपुर। अचानक बैंक में लगा एलार्म बज उठा। चौकीदार चौकन्ने हो गए। पुलिस बुला ली गई। जब देर तक चोरों का पता नहीं चला तो खोज की गई। पता चला कि चार कबूतरों की धमाचौकड़ी के कारण एलार्म बजा था, चोरों का तो दूर तक पता नहीं था।

### उड़ेगा निशांत

बंगलौर। भारत की सेना में निशांत को शामिल किया जाएगा। यह विमान बिना पायलट के उड़ेगा। युद्ध के मैदान में यह बहुत-सी सूचनाएं आसानी से प्राप्त कर लेगा।

### पहले अमरीकी

वाशिंगटन। अमरीका के नार्मन थैगार्ड ने रूसी अंतरिक्ष स्टेशन मीर पर पिचासी दिन पूरे किए। अंतरिक्ष में सबसे अधिक दिन तक रहने वाले वह पहले अमरीकी बन गए हैं। नार्मन इक्यावन वर्ष के हैं।

### चिड़ियों का पार्क

बंगलौर। यहां देश का पहला चिड़ियों का पार्क बनाया जा रहा है। इसमें सौ किस्म की चिड़ियां रखी जाएंगी। इस पार्क को सिंगापुर के मशहूर जुरहांग पार्क की तरह बनाया जा रहा है। इसमें एक सर्कस भी होगा जिसमें चिड़ियां तरह-तरह के करतब दिखाया करेंगी। पार्क सत्रह एकड़ में फैला होगा।

### ब्रिटेन में रिक्शे

लंदन। ब्रिटेन की कुछ सड़कों पर भारतीय रिक्शे चलेंगे। सरकार का मानना है कि पेट्रोल से चलने वाले वाहन जो प्रदूषण फैलाते हैं, वह इससे रुकेगा। अभी चौबीस रिक्शे आयात किए गए हैं। इन्हें चलाने के लए पच्चीस लोगों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

## नन्हा डाक्टर

न्यूयार्क। बाल मुरली का जन्म मद्रास में हुआ था। अब वह अमरीका में रहता है। उम्र है सत्रह वर्ष। वह दुनिया का सबसे कम उम्र का डाक्टर है। अमरीकी सरकार ने उसे प्रेक्टिस करने की विशेष इजाजत दी है। बाल मुरली का कहना है कि उसे भारतीय होने पर गर्व है।

## डायन-भूत के बारे में

पटना। यहां डायन-भूत के कारण बहुत-से लोगों की जानें चली जाती हैं। अब विशेष डायन-भूत सेल का गठन किया गया है जो लोगों को सही जानकारी देगा। पुलिस और गैर-सरकारी संस्थाओं की भी मदद ली जाएगी। जगह-जगह सभाएं करके लोगों में जागृति पैदा की जाएगी।

## ब्रिटेन में भारतीय कला

लंदन। यहां के ब्रिटिश संग्रहालय में 'यूरोप में भारत' नाम से प्रदर्शनी लगी। इसमें भारत की पेंटिंग्स और हाथी दांत का काम भी रखा गया। अकबर और जहांगीर के जमाने में बनी कई कलाकृतियां भी प्रदर्शित की गईं।

## निन्यानवे वर्ष बाद

आक्सफोर्ड। एक कैक्टस जिसका नाम ही 'सेंचुरी प्लांट' है, पूरे निन्यानवे वर्ष बाद खिला है। एक मीटर ऊंचा यह पौधा यहां के वनस्पति उद्यान में लगा है। इससे पहले यही कैक्टस सन १८९६ में खिला था।

## नन्हा डिजाइनर

नई दिल्ली। सनीर राणा चार साल का है। स्कूल में उसे जो भी गृह कार्य दिया जाता है, उसे वह वहीं पूरा कर लेता है। के. जी. में पढ़ने वाला सनीर अपने पिता के कंप्यूटर पर तरह-तरह के डिजाइन भी बनाता है।



## ऐसे बचा पायलट

वाशिंगटन। अमरीकी पायलट कैप्टन स्काट ओ ग्रेदी का विमान बोस्निया के पर्वतीय इलाके में मार गिराया गया। संयोग से पायलट की जान बच गई। मगर छह दिन तक उसे घास-पत्तियां और कीड़े-मकोड़े खाकर जान बचानी पड़ी। ओ ग्रेदी ने अंधेरे में अपना रास्ता खोजा और छह दिन में सुरक्षित स्थान पर लौट आया।

## पहला इनाम

त्रिवेंद्रम। गोवा की एक लाटरी का पहला इनाम था—पांच लाख रुपए और एक मारुति। एक बहुत गरीब मजदूर के टिकट पर यह इनाम निकला। कटा-फटा टिकट होने के कारण उसे यह इनाम नहीं दिया गया। अब केरल राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने आदेश दिया है कि यह इनाम उसे ही दिया जाए।

## यान में घोंसला

केप केनवेरल। कठफोड़वा को पेड़ पसंद न आया। वह जा पहुंचा अंतरिक्ष यान डिस्कवरी के पास। यान को कुछ दिन बाद अंतरिक्ष में जाना था मगर कठफोड़वे को इससे क्या! उसे तो घोंसला बनाना था। वह शुरू हो गया और उसने चोंच मार-मारकर यान में इकहत्तर छेद कर दिए।

## बांह का जुड़ना

भोपाल। काम करते हुए एक इंजीनियर का दायां हाथ कट गया। अगले दिन अस्पताल में जांच से पता चला कि रक्त संचार रुक गया है। हाथ में नसों का रोपण किया गया। डा. ए. के. गुप्ता को आपरेशन में दस घंटे लगे। जहां रक्त रुक गया था, फिर से बहने लगा। बांह कटने के ३२-३४ घंटे बाद उसको दोबारा जोड़ना अनोखी घटना है।

## नन्हे समाचार

☐ चिंगलपेट जिले में प्राचीन विष्णु मंदिर है। उसकी दीवार पर कुछ पंक्तियां उकेरी हुई मिली हैं। उनसे पता चलता है कि एक हजार वर्ष पहले मंदिर के साथ एक बड़ा चिकित्सालय था, जिसमें दूर-दूर से रोगी आया करते थे।

☐ चीन के चियांगृशी प्रांत में एक किसान घर में टी.वी. देख रहा था। तभी एक उल्लू आकर बैठ गया। फिर तो वह रोज आने लगा। बाद में वह उसी घर में रहने भी लगा। शायद उल्लू को टी.वी. देखना बहुत भाया।

☐ मिस्र के सिकंदरिया नगर में सईद मुहम्मद को अजीब रोग हो गया, शरीर फूलने लगा। वजन हो गया ४५० किलो। बीमार हुआ तो उसे घर की दीवार तोड़कर क्रेन के सहारे बाहर निकाला गया। बाद में उसकी मृत्यु हो गई।

☐ पिछले दिनों रूस के कजात्सकोइ गांव पर हजारों मेढकों ने हमला बोल दिया। इससे गांव के निवासी बहुत परेशान हुए। कोई न जान सका कि वे कहां से आ गए। बाद में मेढक फुदकते हुए पश्चिम दिशा में चले गए।

☐ लंदन में बिस्कुटों के डिब्बों की प्रदर्शनी हुई। तरह-तरह के रूपाकार वाले डिब्बे—जैसे हवाई जहाज, रेल इंजन, बस आदि। इसे देखने खूब दर्शक आए।

☐ बंगलौर के निकट हारोहल्ली में एक विशाल बरगद है। इसे देश का दूसरा सबसे बड़ा बरगद कहा जाता है। यह दो एकड़ में फैला है। इसे देखने वालों की भीड़ लगी रहती है।

☐ जे. स्टोक्स ने चौबीस घंटों में ३३१ बार पैराशूट से छलांग लगाकर नया रिकार्ड बनाया है। स्टोक्स अमरीकी सेना में काम करता है।

# सचित्र समाचार

↑ चंदौसी (उ. प्र.) में बच्चों ने 'राम वनवास' नाटक खेला।

कराटे में सबसे कम उम्र का ब्लैकबैल्ट पाने वाला गढ़वाल का अंकुश रावत।

→ अठारहवीं सदी की जार्ज स्टब्स की बनाई पेंटिंग लंदन में साढ़े पंद्रह करोड़ रुपए से अधिक में बिकी।

← बिहार के राज्यपाल श्री ए. आर. किदवई ने साहसी और होशियार बच्चों को इनाम दिए।

↑ नई कार जगुआर : एक घंटे में एक सौ सैंतालीस कि. मी. चलती है। आने वाले खतरों से चालक को पहले ही सचेत कर सकती है।

↑ दिव्या ने भारतीय गंधर्व महाविद्यालय, बम्बई से कत्थक नृत्य की प्राथमिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

अंधेरे में कुछ
राजमहल में राजा को नींद नहीं आ रही थी। अचानक उन्होंने एक पक्षी को विचित्र स्वर में बोलते सुना। वह सोच में पड़ गए।
सेवक को बुलाकर कहा—"अभी-अभी एक परिंदा बोला है। जाकर पता लगाओ, क्या बात है।"
सेवक बाहर आया, राजा ने जिस तरफ जाने का संकेत किया था, उधर ही चल दिया। उसे क्या करना है, यह समझ में नहीं आ रहा था। वह बढ़ता गया।
आगे पेड़ों के झुरमुट में किसी औरत के रोने की आवाज आई। 'मामला कुछ गड़बड़ है।'—यह सोचकर वह तेजी से बढ़ा।
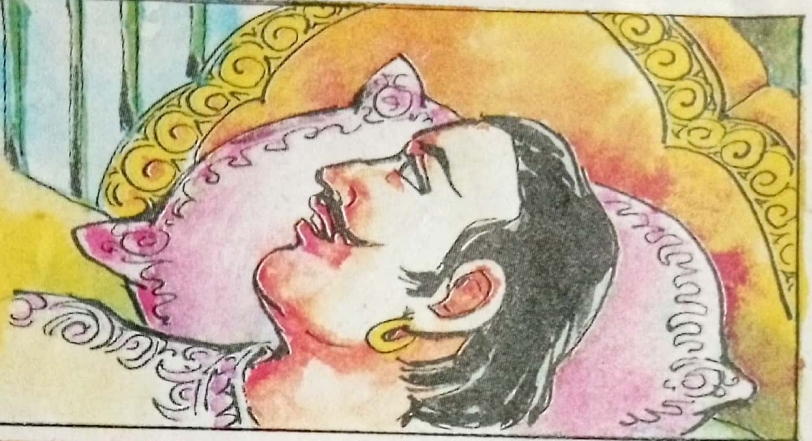
देखा—एक तरफ एक स्त्री खड़ी है। सामने कुछ लोग एक व्यक्ति को मार रहे हैं। उसने ललकारा—''ठहर जाओ दुष्टो !''
वे लोग राजा के सेवक से भिड़ गए। पर उसकी तलवार के आगे टिक न सके। भाग गए।
औरत ने बताया—''हम परदेसी हैं। भटककर यहां आए तो इन लोगों ने हमला कर दिया। तुम न आते तो हमारे प्राण न बचते।''
पति-पत्नी को धर्मशाला में ठहराकर सेवक महल में लौट आया। राजा ने पूछा तो सारी बात बता दी।

सुनकर राजा नाराज हो गए। उन्होंने सेवक को कारागार में डलवा दिया। उसका अपराध यह था कि उसे जो काम सौंपा गया था, वह पूरा नहीं किया।
अगली रात वही परिंदा फिर बोला। राजा स्वयं उसका पता करने निकल पड़े।
आगे झाड़ियों में फुसफुसाहट सुनाई दी। कुछ लोग बात कर रहे थे।
राजा सुनते रहे। राजमहल में चोरी-छिपे घुसने की बात हो रही थी। राजा के विरुद्ध षड्यंत्र रचा जा रहा था।
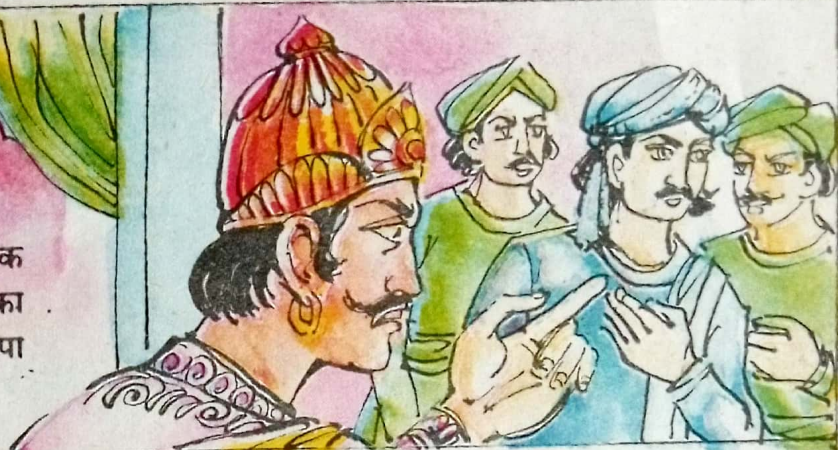
राजा ने उन्हें घेर लिया। वे शत्रु के जासूस थे।
पूछताछ करने पर उस षड्यंत्र में शामिल राजा के कई बड़े अधिकारी भी पकड़े गए।
विशेष दरबार में जासूसों और देशद्रोहियों को कठोर दंड दिया गया।
राजा ने सेवक को मुक्त कर दिया। कहा—''बोलते परिंदे का पता लगाने हम स्वयं भी गए। षड्यंत्र का भंडाफोड़ तो कर सके, लेकिन परिंदे की जानकारी रह गई। समय और स्थितियों को देखकर चलना पड़ता है। तुमने वही किया।''
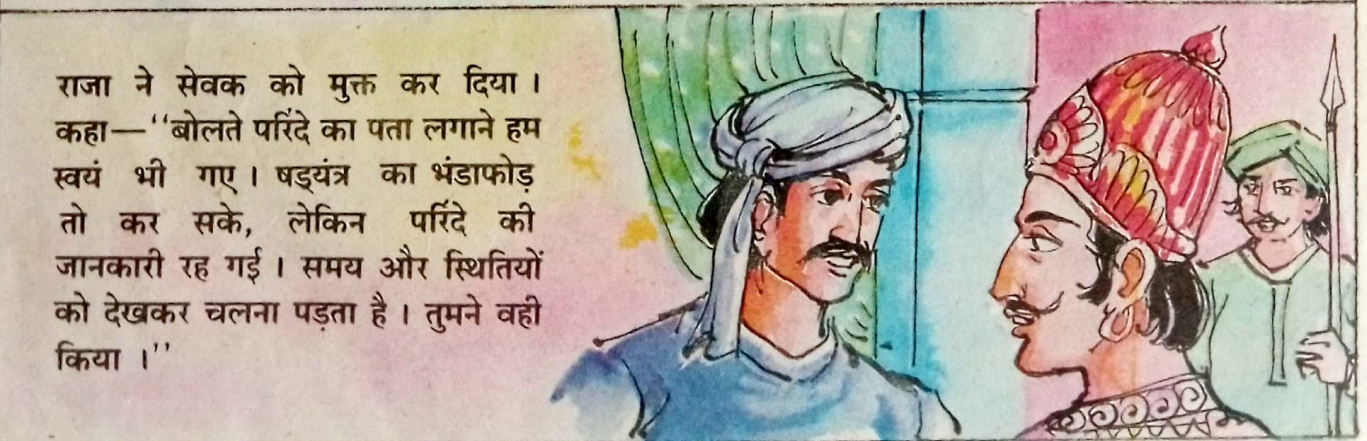
# पांव में सांप

—कल्पनाथ सिंह

एक गांव में मुनेसर नाम का किसान रहता था। उसकी पत्नी और तीन छोटे-छोटे बच्चे थे। वह खेती करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। सिंचाई का साधन न होने से खेती भी अच्छी नहीं होती थी।

एक दिन मुनेसर की पत्नी ने कहा—"सभी लोगों ने कर्ज लेकर सिंचाई की सुविधा कर ली है। आप अगर सिंचाई की सुविधा नहीं करेंगे, तो परिवार का पालन-पोषण भी मुश्किल है।" पत्नी की बात मान, मुनेसर ने सरकार से कर्ज लेकर अपने खेत में भी एक नलकूप लगवा लिया।

मुनेसर के नलकूप के पास एक बहुत पुराना पीपल का पेड़ था। उसी पीपल की कोटर में एक काला भयानक नाग रहता था। और कोई तो नहीं लेकिन मुनेसर को उस नाग के बारे में पहले से ही पता था।

जब से मुनेसर का नलकूप लगा, तब से वह नाग नलकूप का चक्कर लगाया करता था। कभी-कभी तो वह नलकूप की कोठरी में रखी मुनेसर की चारपाई पर ही पसरा रहता लेकिन ज्यों ही मुनेसर जाता, वह सांप चारपाई से उतरकर अदृश्य हो जाता।

उसे देखकर, लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते। लोग मुनेसर को समझाते कि वह नाग को मार दे। वरना एक न एक दिन वह उसकी जान ले लेगा।

लोगों की बात सुनकर मुनेसर हंसकर कहता—"भाई, जब नाग देवता हमारा कुछ बिगाड़ नहीं रहे हैं, तो मैं क्यों उनको मारूं? वह तो मुझ पर कभी फुफकारे भी नहीं। इसलिए मैं इनके साथ किसी भी तरह की ज्यादती नहीं करूंगा। हां अगर मेरी मौत इन्हीं के हाथों लिखी होगी तो कोई कुछ कर ही नहीं सकता। लेकिन जीवित रहते, मैं नाग देवता पर तिनका भी नहीं चलाऊंगा। चाहे वह मुझे काटें या डराएं।"

मुनेसर की बात सुनकर, लोग चुप हो जाते। आपस में कहते कि सांप को दूध पिलाना अच्छा नहीं होता। एक न एक दिन मुनेसर को पता चलेगा कि सांप से दोस्ती का क्या नतीजा होता है?

धीरे-धीरे सांप और मुनेसर की मित्रता हो गई। अब दोनों एक-दूसरे से डरते भी नहीं थे।

एक दिन मुनेसर को अचानक बुखार आ गया। चोरों के डर से उस बुखार में वह नलकूप पर सोने के लिए जाना चाहता था। उसकी पत्नी ने कहा—"चोरी हो जाएगी तो हो जाने दो। मगर बुखार की हालत में, मैं सोने नहीं जाने दूंगी।" मजबूर होकर मुनेसर घर पर ही रुक गया।

उधर चोरों को भी यह पता चल गया कि मुनेसर आज नलकूप पर सोने नहीं आया है। बस फिर क्या था! जब सारा गांव सो गया, तो चोर मुनेसर के नलकूप पर पहुंचे। कोठरी का ताला तोड़कर अंदर गए। आनन-फानन में सारे कल-पुर्जे, मोटर आदि सब खोल लिए। ज्यों ही लेकर चलने को हुए कि वही काला नाग फुफकार कर एक चोर के ऊपर टूट पड़ा।

काले नाग की फुफकार सुनकर, सारे चोर भाग खड़े हुए। जिस चोर के पांव में काला नाग लिपटा था, वह तो डर के मारे बेहोश हो गया। नाग ने भी उसे कई जगह डस लिया।

सूरज निकलने से पहले ही मुनेसर उठा। वह नलकूप की तरफ चल दिया। दूर से उसने कोठरी का दरवाजा खुला देखा तो उसका माथा ठनका। जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाता वह कोठरी के दरवाजे पर पहुंचा तो हैरान रह गया। देखता क्या है कि चोर मरा पड़ा है। काला नाग अब भी उसके पैरों से लिपटा हुआ है। मुनेसर को देखकर, काला नाग धीरे-धीरे न जाने कहां चला गया। मुनेसर यह दृश्य देखकर दंग रह गया। थोड़ी देर में गांव वाले भी वहां आ गए।

सारे गांव के लोग मुनेसर तथा नाग देवता की दोस्ती का लोहा मान गए। सभी लोग कहने लगे कि आज नाग देवता न होते तो मुनेसर बर्बाद हो गया होता।

जन्मदिन पर विशेष

# मंजिल से पहले कभी न रुकना

भोपाल की गुलियादाई गली में एक बालक का जन्म हुआ। पिता पं. खुशीलाल शर्मा शंकर भगवान के भक्त थे। इसलिए उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे का नाम रखा—शंकरदयाल शर्मा।

पिता वैद्य थे। मां सुभद्रा देवी धार्मिक विचारों की थीं, जिनकी जुबान पर रामायण के श्लोक, भगवद्गीता के श्लोक और हितोपदेश की कहानियां हमेशा मौजूद रहती थीं। इन सभी बातों का मिला-जुला प्रभाव बालक के संस्कारी मन पर पड़ा।

जिस पाठशाला में वह पहली बार पढ़ने गए, उसका भी नाम रामकृष्ण पाठशाला था। बालक शंकर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। पढ़ने-लिखने में जितना मन लगता था, उतना ही मन कुश्ती, तैराकी और खेल-कूद में भी लगता था।

शंकर उन दिनों लखनऊ में पढ़ रहे थे। जैसे ही मालूम हुआ कि मां की तबीयत ज्यादा खराब है, वह तुरंत मां के पास चले आए। दबे कदमों से उन्होंने कमरे में प्रवेश किया। देखा कि मां शांत भाव से सो रही हैं। लेकिन पिता के चेहरे की परेशानी को देखकर भांप गए कि मां के चेहरे की शांति सच्ची नहीं है।

कोमल हाथों का स्पर्श पाकर मां ने धीरे-धीरे आंखें खोलीं। सामने अपने शंकर को पाकर उनकी आंखों से आंसू की धारा बह चली।

"बेटा शंकर ! तुम खूब पढ़ना। पढ़ोगे न ?"

"हां मां, मैं खूब पढ़ूंगा। तुम खुद देखना कि मैं कितना पढ़ता हूं। मैं भी गांधी जी और नेहरू जी की तरह इंग्लैंड में जाकर पढ़ूंगा।"

बी. ए. करने के लिए शंकर इलाहाबाद चले गए।

एक बार की बात है। डा. शर्मा ने सुना कि पं. नेहरू एक सभा को सम्बोधित करने वाले हैं। वह भी पहुंच गए। काफी भीड़ थी। उस समय लोगों के मन में देश की आजादी के लिए एक जज्बा था। पं. नेहरू ने बोलना शुरू किया—"जब किसी की मां जंजीरों में जकड़ी हुई, जेल में कैद हो, ऐसे में भला उसका कोई बेटा चैन से कैसे रह सकता है ? हमारा मुल्क आज अंग्रेजों का गुलाम है। हम सब उसके बेटे हैं। हम सबको कसम खानी है कि जब तक हम अपनी मां को आजाद नहीं करा लेंगे, तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।"
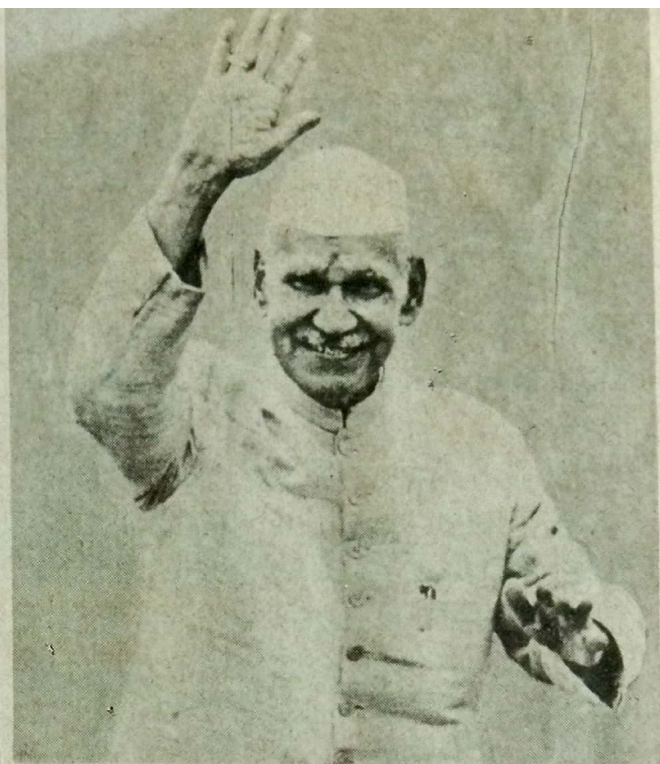
पं. नेहरू के शब्द डा. शर्मा के दिल और दिमाग में पूरी तरह उतर गए थे। अब तक उन्होंने सोचा था कि वह आई. सी. एस. अधिकारी बनेंगे। लेकिन जैसे ही उन्होंने पं. नेहरू का भाषण सुना, वैसे ही उन्होंने फैसला किया—'नहीं, मुझे सरकारी नौकर नहीं बनना है, पढ़ने के बाद पढ़ाया जाए ताकि देश को अच्छे और होनहार नागरिक दे सकूं।'-यह सोचकर डा. शर्मा लखनऊ आ गए।

लखनऊ विश्वविद्यालय से ही डा. शर्मा ने एल. एल. एम. की परीक्षा पास की और प्रथम रहे।

उस दिन तो शंकरदयाल शर्मा भावुक होकर करीब-करीब रो ही पड़े, जब उन्हें उसी कक्षा में जाकर पढ़ाना पड़ा, जिसमें वह कभी खुद पढ़े थे। एक तरफ तो अच्छे-से-अच्छा पढ़ाने की इच्छा और दूसरी तरफ 'भारत छोड़ो आंदोलन' के तूफान से गुजरता हुआ

देश । उन्होंने 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लेने के लिए नौजवानों को तैयार करना शुरू किया । उस समय वह लखनऊ विश्वविद्यालय की पत्रिका 'लाइट एंड लर्निंग' के प्रधान सम्पादक थे ।

बाद में डा. शंकरदयाल शर्मा इंग्लैंड गए । वहां के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ने लगे । कभी इसी विश्वविद्यालय में सुभाषचंद्र बोस भी पढ़ा करते थे । वह खूब पढ़ते । रात-दिन पढ़ते । वहां के जीवनमूल्यों को देखते और समझते । वहीं से उन्होंने विधि में पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की ।

इंग्लैंड में ही रहते हुए उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से पहले प्रशासन में डिप्लोमा किया । बाद में वह उसी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में विधि पढ़ाने लगे, जिसमें स्वयं पढ़े थे । वह अमरीका के हारवर्ड ला स्कूल के फैलो भी बने ।

जब वह भोपाल लौटे तो स्टेशन पर उनका स्वागत करने वालों की इतनी भीड़ थी कि उनकी अपनी विमाता बड़ी मुश्किल से अपने बेटे के पास तक पहुंच सकी थीं ।

१९५२ में आजाद हिन्दुस्तान का प्रथम आम चुनाव होना था । 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान डा. शर्मा नेहरू जी के करीब आ गए थे । एक दिन डा. शर्मा के पास नेहरू जी का बुलावा आया —'तुम्हें भोपाल जाकर चुनाव की बागडोर सम्भालनी है । चुनाव भी लड़ना है ।'

चुनाव हुए । डा. शर्मा चुनाव जीते और बने भोपाल राज्य के पहले मुख्य मंत्री । उस समय उनकी उम्र साढ़े तैंतीस साल से कुछ ही दिन अधिक थी ।

चार साल से भी अधिक वह भोपाल राज्य के मुख्य मंत्री रहे । नया मध्यप्रदेश बनने पर वह ग्यारह वर्ष तक शिक्षा, विधि, उद्योग, लोकनिर्माण आदि विभागों के मंत्री रहे ।

बाद में डा. शर्मा को प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने दिल्ली बुला लिया । यहीं से उनकी राष्ट्रीय राजनीति की शुरुआत हुई । कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ और डा. शर्मा उस कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए जिसके अध्यक्ष इससे पहले पं. नेहरू, सरदार पटेल, सुभाषचंद्र बोस जैसे महान नेता रह चुके थे ।

१९८७ में वह उपराष्ट्रपति बने । इसी के साथ वह राज्यसभा के पदेन सभापति बने ।

२५ जुलाई, १९९२ को वह भारत के राष्ट्रपति के रूप में देश के प्रथम नागरिक बने ।

शंकरदयाल शर्मा को अपने देश की संस्कृति से बहुत अधिक लगाव है । चाहे वह भारत में रहें या विदेश में, उन्होंने कभी भी अपनी पोशाक नहीं छोड़ी । विदेश के लोग उनका इसलिए भी अधिक सम्मान करते हैं क्योंकि उनमें वे सच्ची भारतीयता देखते हैं ।

वह संस्कृत, हिंदी, उर्दू, मराठी और अंग्रेजी के अच्छे जानकार हैं । शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी माध्यम से ही हुई है लेकिन इसके बावजूद वह हिंदी में बात करना पसंद करते हैं और इसमें गर्व भी महसूस करते हैं ।

१९ अगस्त, १९१८ में जन्मे श्री शर्मा का पढ़ने का शौक आज तक बरकरार है । उनके पास अपनी खुद की लाइब्रेरी है, जिसमें सभी विषयों की करीब पंद्रह हजार पुस्तकें हैं । अपनी इस लाइब्रेरी में जाकर उनके मन को सच्ची शांति मिलती है । इसीलिए वह लेखकों और साहित्यकारों से मिलना पसंद करते हैं । बिना पढ़े तो उन्हें नींद ही नहीं आती ।

डा. शंकरदयाल शर्मा सही मायने में धार्मिक आस्था वाले व्यक्ति हैं । उनके लिए धर्म का मतलब है—सदाचार, सद्‌गुण, सेवा, सद्‌भाव और सहयोग । उनका मानना है—''सच्चा धर्म व्यक्ति को सदाचारी बनाता है ।''

जब भी वह बच्चों को देखते हैं, उन्हें अपना बचपन याद आ जाता है—'इन्हीं में से न जाने कब कौन गांधी बन जाए, पं. नेहरू बन जाए ।'

वह हमेशा बच्चों को विवेकानंद का यह कथन याद दिलाते रहते हैं—'जागो, उठो और जब तक मंजिल पर पहुंच न जाओ, तब तक रुको नहीं ।'

(प्रस्तुति : विजयकुमार)

(शीघ्र प्रकाश्य 'हमारे राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा' से)

# गले मिले

—दिलीपकुमार तेतरवे

मगध का राजा सूर्यमाल वीर योद्धा था। उसकी वीरता का लोहा अनेक राजा मानते थे। कुछ राजाओं ने बिना युद्ध के मगध को कर देना स्वीकार कर लिया था। मगध का खजाना हमेशा स्वर्णमुद्राओं और हीरे-जवाहरातों से भरा रहता। सूर्यमाल हर दिन कोषागार में जाता। अपनी मुट्ठियों में हीरे-जवाहरात भरकर घमंड से कहता—"धन और शक्ति के बल पर मैं पूरी धरा पर शासन करूंगा।"

राजा सूर्यमाल के कोष में अकूत धन रहते हुए भी मगध की प्रजा सुखी नहीं थी। राजा ने प्रजा से धन वसूलने के लिए अनेक कर लगा रखे थे। प्रजा करों के बोझ से परेशान थी।

एक दिन राजा सूर्यमाल को उसके मंत्री कालचक्र ने सूचना दी—"महाराज, पलामू के राजा चंद्रकेतु ने मगध को कर देने से मना कर दिया है।"

राजा सूर्यमाल क्रोध से भर उठा। उसने महामंत्री को तुरंत आदेश दिया—"महामंत्री भावानंद, राजा चंद्रकेतु को जल्दी ही बंदी बनाकर मेरे सामने लाया जाए।"

महामंत्री ने राजा से कहा—"महाराज, पलामू जंगल और पहाड़ों से भरा राज्य है। पलामू पर हमला करने से पूर्व अपनी सेना को बहुत तैयारी करनी होगी। हमारी सेना जंगल और पहाड़ी प्रदेश में युद्ध करने में कुशल नहीं है।"

महामंत्री की बात सुनकर राजा सूर्यमाल आगबबूला हो उठा। उसने आदेश दिया—"इस कायर महामंत्री को कारागार में डाल दिया जाए। हम जंगल, पहाड़ या समुद्र से नहीं डरते।" सैनिकों ने महामंत्री को कारागार में डाल दिया।

राजा के आदेश से राजकुमार शीलभद्र सेना की टुकड़ी लेकर पलामू के राजा चंद्रकेतु को बंदी बनाने के लिए निकल पड़ा।

इधर पलामू के राजा चंद्रकेतु ने जंगल और
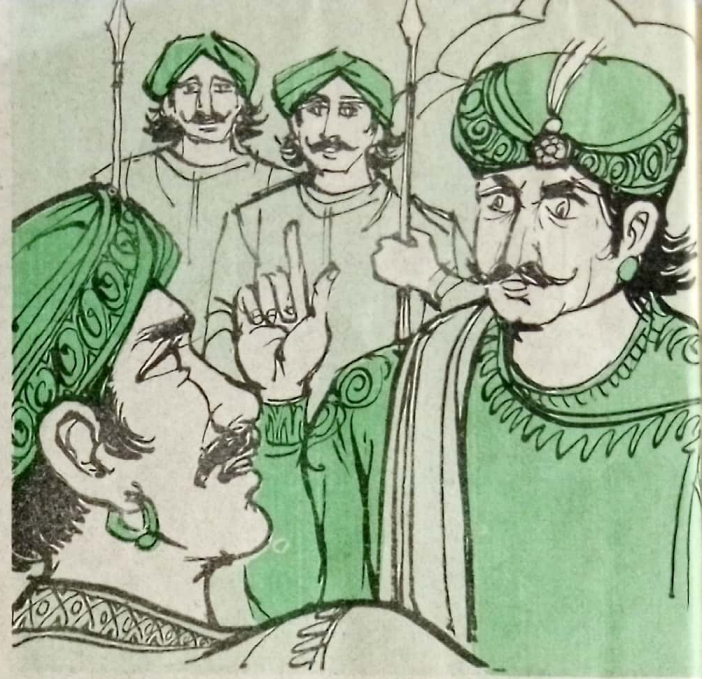
पहाड़ों के बीच शीलभद्र को चुनौती देने की तैयारी पूरी कर ली थी। राजकुमार भी अपने पिता की तरह ही सोचता था—'मगध की सेना का नाम सुनते ही पलामू का राजा चंद्रकेतु हार मान लेगा। युद्ध की नौबत आएगी ही नहीं।' राजकुमार निश्चिंत था। उसकी सेना भी सतर्क नहीं थी। अतः उसकी सेना राजा चंद्रकेतु द्वारा जंगल और पहाड़ों के बीच रचे गए व्यूह में फंस गई। राजकुमार ने आत्मसमर्पण कर दिया। पलामू के सैनिकों ने राजकुमार और उसके सैनिकों को बंदी बना लिया।

राजा सूर्यमाल ने राजकुमार को बंदी बनाए जाने का समाचार सुना। उसने सेनापति मार्तंड को बुलाकर आदेश दिया—"सेनापति, कल प्रातः मैं अपनी चतुरंगी सेना के साथ राजा चंद्रकेतु को दंड देने के लिए कूच करना चाहता हूं।"

सेनापति ने कहा—"महाराज, आपके आदेश का पालन होगा।"

रात में राजा सूर्यमाल जब राजमहल पहुंचा तो राजकुमारी चंपा ने उससे कहा—"पिता जी, आप एक बार महामंत्री भावानंद से मशविरा कर लें तो अच्छा रहेगा।"

यह सुनकर राजा सूर्यमाल ने कहा—"यह सलाह अगर किसी और ने दी होती तो उसका सिर अब तक धड़ से अलग हो चुका होता। तुम अपने

कक्ष में जाओ।''

प्रातः होते ही राजा सूर्यमाल ने सेना के साथ पलामू की ओर कूच किया। पलामू की सीमा के अंदर पहुंचते ही उसकी चतुरंगी सेना राजा चंद्रकेतु के व्यूह में फंस गई। आखिर में प्राण बचाने के लिए राजा सूर्यमाल ने आत्म समर्पण कर दिया।

राजा चंद्रकेतु के सैनिक राजा सूर्यमाल और उसके सैनिकों को बंदी बनाकर बड़े खुश थे। वे नगाड़े बजाते और गीत गाते चले जा रहे थे। उसी समय राजकुमारी चंपा ने सेना की एक छोटी टुकड़ी के साथ चंद्रकेतु के काफिले पर अचानक हमला कर दिया। राजा चंद्रकेतु के सैनिक भाग खड़े हुए। चंपा ने राजा चंद्रकेतु को बंदी बना लिया।

राजकुमारी ने राजा सूर्यमाल के बंधन खोल दिए। फिर उनसे पूछा—''पिता जी, क्या मैं आपसे कुछ मांग सकती हूं?''

''क्यों नहीं? आज तो मैं तुमसे बहुत खुश हूं। मांगो, क्या मांगती हो?''—राजा सूर्यमाल ने कहा।

राजकुमारी बोली—''पिता जी, आप मगध की प्रजा पर लादे गए अनावश्यक करों को समाप्त कर दें। मैं महामंत्री भावानंद की सलाह पर ही चलकर, आपको मुक्त करा सकी हूं। आप उन्हें कारागार से मुक्त कर दें। राजा चंद्रकेतु से संधि कर लें। साथ ही, पड़ोसी राज्यों के साथ अनावश्यक युद्ध लड़ना छोड़ दें।''

राजा सूर्यमाल बोले—''तुम्हारी ये मांगें सबके भले के लिए हैं। मैं तुम्हारी सारे मांगें पूरी करूंगा। मैं महामंत्री भावानंद से क्षमा मांगूंगा। राजा चंद्रकेतु से संधि कर लूंगा।''

राजकुमारी चंपा ने सैनिकों को आदेश दिया—''राजा चंद्रकेतु के बंधन खोल दिए जाएं और उनको पूरे सम्मान के साथ बैठने के लिए आसन दिया जाए।''

राजा चंद्रकेतु ने कहा—''मेरे बंधन मत खोलो। अभी युद्ध समाप्त नहीं हुआ है। राजा के बंदी हो जाने से कोई राज्य पराधीन नहीं हो जाता। पलामू अभी भी स्वतंत्र है।''

राजकुमारी चंपा ने राजा चंद्रकेतु के बंधन अपने हाथों से खोलते हुए कहा—''महाराज चंद्रकेतु, आप अपने बेटे राजकुमार चैतन्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन मैंने उसे भी बंदी बना लिया है। संधि के लिए मैं आप पर दबाव नहीं डालूंगी। बिना संधि किए भी आप यहां से जा सकते हैं।''

राजा चंद्रकेतु ने पूछा—''क्या मेरा पुत्र चैतन्य मगध के कारागार में है?''

चंपा ने कहा—''महाराज, राजकुमार चैतन्य को पलामू की राजधानी बेतला भेजा जा चुका है।''

उसी समय घोड़े की टापों की आवाज सुनाई दी। राजकुमारी के साथ आए सैनिक सावधान हो गए। एक सैनिक ने राजकुमारी को बताया—''राजकुमार चैतन्य दस-बारह घुड़सवारों के साथ इधर ही आ रहे हैं।''

थोड़ी देर बाद राजकुमार चैतन्य वहां पहुंचा। उसने अपने पिता राजा चंद्रकेतु से आग्रह किया—''पिता जी, हमें मगध से संधि कर लेनी चाहिए। जिस राज्य में राजकुमारी चंपा जैसी साहसी बालाएं हों, उस राज्य से वैर नहीं रखना चाहिए।''

राजा चंद्रकेतु ने मित्रता के लिए अपनी बांहें राजा सूर्यमाल के सामने फैला दीं। उसने कहा—''राजकुमार चैतन्य ठीक कहता है। पलामू और मगध के बीच संधि होनी ही चाहिए।''

यह सुन राजा सूर्यमाल अपने आसन से उठा। उसने चंद्रकेतु को गले से लगा लिया। उसके बाद से मगध और पलामू के बीच कभी युद्ध नहीं हुआ।

# यून सू

—वैष्णवी

कई साल पहले यून सू नामक एक लड़का था।

उसके पिता का स्वर्गवास हो गया था। वह अपनी मां के साथ अकेला रहता था। वह बहुत ही गरीब था। फिर भी वह पढ़ना चाहता था। पर उसके पास कापी-किताब नहीं थीं। इसके बावजूद उसने पढ़ने की ठान ली।

दूसरे दिन वह अपने अमीर पड़ोसी के पास गया। उसने पड़ोसी से कहा—"मैंने सुना है कि आप एक नौकर की तलाश में हैं। आप मुझे काम पर रख लीजिए। मैं आपके यहां घर के सारे काम, बगैर तनख्वाह के कर दिया करूंगा। पर आप मुझे इतनी इजाजत दे देना कि मैं कभी-कभी यह देख सकूं कि आपके बेटे कैसे पढ़ते हैं।"

यह सुन अमीर पड़ोसी काफी खुश हो गया। उसने यून सू को काम पर रख लिया।

यून सू पड़ोसी के यहां काम में लग गया। वहां वह खूब काम करता। जब अमीर के बेटे पढ़ने बैठते, तो यून सू कोने में बैठकर सबका पाठ सुना करता था।

एक वर्ष के भीतर ही यून सू को खूब पढ़ना आ गया। पर वह लिखना नहीं सीख सका था क्योंकि उसके पास कापी और कलम नहीं थीं। यून सू को तो सीखना था, पर सीखे कैसे ? वह यह नहीं सोच पा रहा था। उसका घर समुद्र तट पर था। एक दिन उसने एक लम्बा डंडा लिया। वह समुद्र तट पर पहुंचा। वह डंडे से रेत पर शब्द लिखने का अभ्यास करने लगा। पर कुछ ही देर में समुद्र की लहरों ने रेत पर लिखे उन शब्दों को मिटा दिया। वह इस तरह लिखता गया और बार-बार समुद्र की लहरें उसे मिटाती गईं। इस प्रकार बालक यून सू पढ़ना-लिखना सीख गया।

वर्षों बाद वही यून सू प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन गया। आज भी लोग उसे याद करते हैं। ●

# आबनूस का पेड़

—अरविंद बेलेवार

राजा चेदि के दो पुत्रियां थीं। बड़ी का नाम उडुपी और छोटी का नाम इलया था। उडुपी रूपवती लेकिन घमंडी थी। इलया कुरूप लेकिन गुणवती थी। राजा ने उडुपी के लिए चैलव के राजकुमार चैल को पसंद किया। चैल रूपवान, मेधावी और गुणवान था, लेकिन उडुपी ने अपने पिता से साफ-साफ कह दिया— "मैं चैल की परीक्षा लिए बगैर उससे विवाह नहीं करूंगी।"

राजा के बहुत समझाने-बुझाने पर भी उडुपी ने हठ न छोड़ा। राजा ने अपने एक विशेष दूत के हाथ यह संदेश चैलव भेजा। उडुपी की शर्त जानकर चैल को बड़ा क्रोध आया। उसने मन ही मन कुछ फैसला किया। वह एक दिन चेदि के महल में पहुंच गया।

वहां उसका भव्य स्वागत किया गया। उसे राज्य की अतिथिशाला में ठहराया गया। चैल की परीक्षा लेने उडुपी सज-धजकर इलया के साथ उसके पास पहुंची। वह चैल को देखते ही अपनी सुध-बुध खो बैठी। उसने जैसे-तैसे चैल से कुछ प्रश्न किए। फिर तुरंत शादी की हामी भर दी।

अगले दिन राजमहल में सब यह जानकर हैरत में पड़ गए कि चैल इलया से विवाह करने को राजी है।

कुछ दिन बाद चैल का इलया से विवाह धूमधाम से हो गया। इलया विदा होकर अपने पति के घर जाने

के लिए रवाना होने लगी। तभी उडुपी ने उसे तोहफे में एक हीरे की अंगूठी, कंघी और एक जोड़ी जूती दी। उसे सलाह दी—"तुम इनका इस्तेमाल जरूर करना।"

इलया बहन की चाल से अनजान थी। जबकि उडुपी ने ये चीजें जादूगरनी कोणकी से तैयार कराई थीं।

इलया ने डोली में बैठते ही अंगूठी अंगुली में डाली। सहसा वह मूर्च्छित हो गई। चैल बरात लेकर अपने महल पहुंचा। उसने डोली का पर्दा हटाया। वह ठिठक गया क्योंकि इलया अचेत पड़ी थी। तुरंत राजवैद्य को बुलाया गया।

राजवैद्य आया। उसने इलया की नाड़ी देखी। वह बोला—" यह मर चुकी है।"

चैल की मां ने इलया की अंगुली में चमकती हीरे की अंगूठी देखकर कहा—"यह अंगूठी हमारे घराने की नहीं है।"

जैसे-तैसे इलया के अंतिम संस्कार की तैयारी होने लगी। पुरोहित के कहने पर सारे आभूषणों के साथ इलया के बदन से अंगूठी भी उतारी गई। अंगूठी उतरते ही इलया के शरीर में जान आ गई। वह उठ बैठी। लोग हैरत में पड़ गए।

इलया को पाकर चैल राज परिवार धन्य हो गया। उसके गुणों से सभी प्रभावित थे। यह खबर उडुपी को भी लगी। वह जल-भुन गई। उसने अपनी खास दूती को इलया के पास भेजा। दूती इलया के पास पहुंची। उसने कहा—"उडुपी ने कंघी का इस्तेमाल करने की सलाह दी है।" यह सुन इलया ने बालों में कंघी फेरी। इलया फिर अचेत हो गई। महल में शोर मच गया। तमाम उपाय किए गए, पर इलया को होश नहीं आया। लेकिन अंतिम संस्कार के समय उसके बालों में फंसी कंघी निकाली गई, तो वह उठ बैठी।

उडुपी की चाल इस बार भी नाकामयाब रही। दिन गुजरते गए। इलया ने एक सुंदर बच्चे को जन्म दिया। इस अवसर पर उत्सव का आयोजन किया गया। उसमें उडुपी भी आई। उसने रात में भोज के समय इलया को सजाया। फिर उसने इलया से हीरे की जूती पहनने के लिए कहा।

इलया ने हीरे की जूतियां पहनी ही थीं कि वह अचेत होकर गिर पड़ी। महल में शोक छा गया। इलया के अंतिम संस्कार की तैयारी शुरू हो गई। इस बार उडुपी ने इलया के शरीर से कोई चीज नहीं उतारने दी।

इलया का शव कर्यत पर्वत के पास नदी के किनारे लाया गया। चिता सजाई गई। उस पर शव रखा गया। तभी इलया के पांवों से जूतियां सरक कर नीचे गिर पड़ीं।

तुरंत इलया को होश आ गया। वह चिता पर उठ बैठी। यह देखकर सब भयभीत हो उठे। इलया को सहीसलामत देख चैल की खुशी का ठिकाना न रहा। चैल को हीरे की जूतियां अजीब लगीं। पूछने पर इलया ने बताया—"मुझे ये जूतियां उडुपी ने भेंट में दी थीं।"

चैल का इशारा पाते ही सैनिकों ने उडुपी को कैद कर लिया। उसने उडुपी को डराया-धमकाया। उडुपी ने अपनी गलती मान ली।

चैल उडुपी को कठोर दंड देता लेकिन इलया के समझाने पर उसने उडुपी को माफ कर दिया। चैल ने उसे फौरन राज्य छोड़कर जाने का आदेश दिया।

उडुपी लौटकर अपने पिता के घर नहीं गई। बाद में उसका क्या हुआ, कुछ सही-सही पता नहीं चला। आज भी आबनूस के पेड़ को कोंकणी उडुपी के नाम से पुकारते हैं। ●

□ जज— तुमने अपनी सफाई में कुछ नहीं कहा ?
अभियुक्त— कैसे कहूं और क्या कहूं ? चार-पांच दिन से पानी न आने के कारण मैं नहा नहीं सका ।

□ किराएदार— भाई साहब, आपके मकान की छत से पानी टपकता है ।
मकान मालिक— यह लो छतरी । इसे लेकर बैठ जाना, फिर तुम भीगोगे नहीं ।

□ भिखारी— भाई साहब, कल भी आपने बहाना बनाकर मुझे टाल दिया था, आज तो कुछ दे दीजिए ।
राहगीर— रास्ते में एक-दूसरा भिखारी मिल गया था । उसे मैंने कल की जगह आज पैसे दिए हैं । अब मैं तुम्हें कल दे दूंगा ।

□ बड़ा भाई— तुम्हें घर कब अच्छा लगता है ?
छोटा भाई— जब घर पर तुम नहीं होते ।

□ मां— बेटा, जब देखो तब तुम मुझसे बहस करते रहते हो ।
बेटा— वकील बनने के लिए यह बहुत जरूरी है ।

□ महेश— यह मूर्ति राष्ट्रीय सम्पत्ति है ।
नरेश— तभी तो इसे घर ले जा रहा हूं । यहां की अपेक्षा वहां ज्यादा सुरक्षित रहेगी ।

□ रामू— सोनू, तुमने सारा दूध पी लिया ।
सोनू— नहीं, थोड़ा-बहुत बिल्ली के लिए भी छोड़ दिया है ।

□ एक सहेली— तुम्हारा कुत्ता अब मुझे देखकर भौंकता नहीं है ।
दूसरी— उस दिन भौंकेगा, जिस दिन तुम इसके लिए कुछ खाने को नहीं लाओगी ।

□ अनिल— सुनील, आज सुबह से मैंने कुछ नहीं खाया ।
सुनील— अरे, यह बात तुमने मुझे घर से चलते समय क्यों नहीं बताई । मैं तो अपना पर्स घर पर ही भूल आया ।

□ एक सहेली— कुत्ता पालना भी मुसीबत है ।
दूसरी सहेली— पर और कई मुसीबतों से छुटकारा भी तो मिल जाता है ।

□ एक गप्पी— तुम शेरों के साथ घूम सकते हो ?
दूसरा गप्पी— हां, मैं तो कल ही उनके साथ घूमने गया था । उन्होंने तुम्हें भी बुलाया है ।

□ विजय— मैं तुम्हारे साथ रहता, तो तुम दुकानदार को झांसा नहीं दे सकते थे ।
सुरेश— तभी तो मैंने वहां जाने से पहले तुम्हें टरका दिया था ।

□ एक सहेली— कल हमारे नौकर ने बिलकुल बेकार भोजन बनाया था ।
दूसरी सहेली— यह तो अच्छा हुआ कि मैं कल यहां नहीं आई ।

□ एक पड़ोसी— भाई साहब, आप अपनी सेहत का ध्यान रखिएगा । आजकल काफी लोग बीमार हो रहे हैं ।
दूसरा पड़ोसी— हां, यही बात मैं आप से कहने जा रहा था । कुछ दिन पहले ही मेरे बेटे ने दवा की दुकान खोल ली है । आप सेवा का एक मौका अवश्य दें ।

□ महिला—आज दूध गरम क्यों है ?
दूध वाला—लगता है, बेटे ने भूल से दूध में गरम पानी डाल दिया।

□ भिखारी—साहब, एक रुपया दे दीजिए, मेरा काम बन जाएगा ।
राहगीर—पर मेरा काम तो पचास पैसे में बन जाएगा । तुम्हीं पचास पैसे दे दो ।

□ पिता—बेटा, तुम इतनी तेज क्यों भागकर आए ?
बेटा—मेरे पीछे-पीछे बाग का माली जो आ रहा है ।

□ एक महिला—ये गधे यहां क्यों घूम रहे हैं ?
दूसरी महिला—यह सवाल आप उन्हीं गधों से पूछिए । मैं तो यहां नई-नई आई हूं ।

□ आयोजक—यहां श्रोता कम हैं। आप अच्छी कविताएं सुनाना ताकि लोग डटे रहें ।
कवि—आप पहले बता देते तो मैं और श्रोताओं को भी साथ में ले आता ।

# तेनालीराम ३२८

## बंद दरवाजे

एक बार कृष्णदेव राय के दरबार में एक जादूगर आया। उसने तरह-तरह के खेल दिखाए। सभी ने उसकी खूब प्रशंसा की। राजा बोले— "हमें तो कोई ऐसा करिश्मा दिखाओ, जो कभी न देखा हो।"

जादूगर हंसकर बोला— "महाराज, मैं आपको परियां दिखा सकता हूं। पूनम की रात आप सारे नगरवासियों के साथ जंगल के तालाब पर पधारें।"

राजा बहुत खुश हुए। पूनम की रात जब राजा सब लोगों के साथ नगर के द्वार पर पहुंचे, तो पता चला सारे दरवाजे बंद हैं। राजा को बहुत गुस्सा आया।

पूछताछ करने पर पता चला कि दरवाजे तेनालीराम ने बंद कराए हैं। राजा ने क्रोध से कहा— "तेनालीराम, दरवाजे बंद कराने की तुमने हिम्मत कैसे की? तुम्हें पता नहीं आज हमें परियां देखनी थीं।"

तेनालीराम हाथ जोड़कर बोला— "महाराज, जिन परियों को आप वहां देखने जा रहे थे, वे तो यहीं हैं। कहीं वे चली न जाएं इसलिए दरवाजे बंद करवा दिए थे।"

तेनालीराम ने इशारा किया तो सैनिक कुछ आदमियों को पकड़कर लाए। वे परियों के वेश में थे। राजा समझ न सके कि माजरा क्या है?

तेनालीराम ने कहा— "महाराज, जिस दिन से यह घोषणा हुई थी कि नगरवासी परियों का नृत्य देखने नगर के बाहर सरोवर पर पहुंचें। मुझे तभी शक हुआ था। मैंने गुप्तचरों से पता करवाया। ये नकली परियां नाचती रहतीं और शत्रु नगर में गड़बड़ी फैला देते। जब तक आपको पता चलता, कोषागार लूट लिया गया होता।"

परी बने शत्रु-सैनिक कारागार में गए तो राजा बोले— "तेनालीराम, तुमने नकली परियां तो दिखाईं, असली कब दिखाओगे?"

तेनालीराम ने हंसकर कहा— "महाराज, इसके लिए सच्चा जादूगर चाहिए।"

# गोदान

—डा. मनोहरलाल

भगवान रामचंद्र को वनवास की आज्ञा मिली। राम वन जाने लगे तो उनका हृदय दानवीरता के भाव से भर गया। उन्होंने जी खोलकर धन दान दिया। वह भी इतना कि लोग उनके चौदह साल के वनवास काल तक खुलकर खर्च कर सकें। उन्होंने खूब दान दिया।

उन दिनों अयोध्या में एक बूढ़ा और गरीब ब्राह्मण भी रहता था। उसका नाम त्रिजट था। वह रोजी-रोटी की चिंता से पीला पड़ गया था।

त्रिजट की पत्नी को भगवान रामचंद्र द्वारा दान दिए जाने की कहीं से भनक पड़ी। अपने पति से बोली—"नाथ! प्रभु रामचंद्र की शरण में जाओ। वह बड़े दयालु हैं। वह दान में आपको धन अवश्य देंगे। उनके दान से हमारा जीवन सुख से कट जाएगा।"

त्रिजट रामजी के पास जाकर बोला—"राजन्! गरीब हूं। मेरा कुटुम्ब बड़ा है। मेरी दशा अच्छी नहीं है। मुझ पर कृपा कीजिए, जितना उचित समझें, उतना धन दे दीजिए।"

त्रिजट की बातें सुनकर राम मंद-मंद मुसकराए। फिर बोले—"हे द्विज! आपके पास यह दंड है। इसे दोनों हाथों से पकड़िए। आप इसे अधिक से अधिक दूर फेंकने की कोशिश कीजिए। दंड जहां गिरेगा, वहां तक की गायें आपकी हो जाएंगी।"

त्रिजट तो दुबला-पतला था। उसने मन ही मन सोचा—'कोशिश करनी चाहिए।' यह सोच उसने पूरे जोर से दंड फेंका।

पर यह क्या! दंड सरयू नदी के उस पार जा गिरा। वहां बहुत सारी गायें चर रही थीं। जहां दंड गिरा, वहां तक की गायें त्रिजट की हो गईं।

त्रिजट को समझते देर न लगी—'यह भगवान राम की महिमा का चमत्कार है, वरना मुझमें इतनी शक्ति कहां कि मैं दंड सरयू के उस पार तक फेंक सकूं।'

त्रिजट ने भगवान राम के सम्मुख हाथ जोड़ दिए। राम मंद-मंद मुसकरा रहे थे। ●
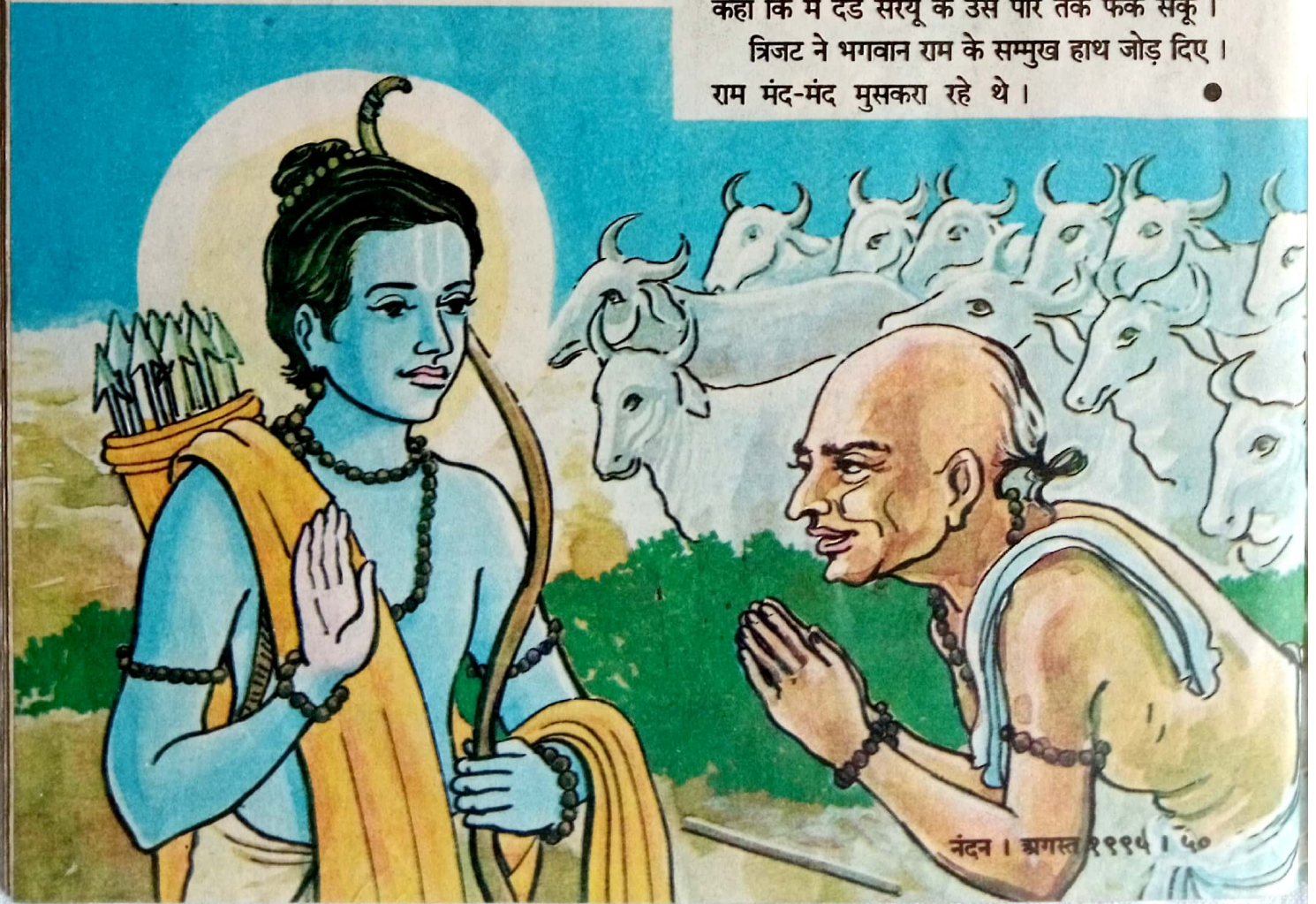
यही है प्राइम की विजेता रेखा.
PRIME LEADER
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
PRIME GENIUS
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
PRIME RANK
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
PIDILITE
PRIME MERIT
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
PIDILITE
आ गए, उत्कृष्ट दर्जे के कम्पास बॉक्स. यह अचूक कामगिरी, संपूर्ण नियंत्रण एवं उत्कृष्ट कार्यकुशलता के लिए खास तौर पर तैयार किए गए हैं.
तो दीजिए अपने नन्हें-मुन्नें को प्राइम. जिसके सहारे वो चढ़ता जाए कामयाबी की सीढ़ियां, और बने विजेता.
प्राइम मेरिट
प्राइम रैंक
प्राइम जीनियस
प्राइम लीडर
मैथमेटिकल ड्रॉइंग इन्स्ट्रुमेंट्स
PIDILITE PRODUCTS
PID 63 95 HIN

# बूढ़ी दुलहन

—एस. एम. खान

बहुत पुरानी बात है, दो बूढ़ी बहनें साथ रहती थीं। दोनों की शादी नहीं हुई थी।

एक दिन छोटी बहन ने बड़ी बहन से कहा—"आज शहजादा जुमे की नमाज पढ़ने के लिए हमारे घर के नीचे से गुजरेगा। मैं उसके सिर पर थोड़ा-सा पानी डाल दूंगी। तुम चिल्लाना—'बहन, क्या करती हो ? जिस पानी से तुमने हाथ-मुंह धोया था, वही पानी शहजादे पर गिरा दिया।' फिर देखना क्या होता है।"

उसके बाद छोटी बहन ने पानी में गुलाब जल मिलाया। जूही के फूल की कलियां उसमें डालीं। इससे पानी महकने लगा। दोपहर को शहजादा उनके घर के नीचे से गुजरा। छोटी बहन ने पानी शहजादे के ऊपर गिरा दिया। बड़ी बहन ने चिल्लाना शुरू कर दिया—"बहन, यह क्या करती हो ? हाथ-मुंह धोया पानी तुमने शहजादे के ऊपर गिरा दिया। अब शहजादे के दंड से अल्लाह ही बचा सकता है।"

शहजादा सुगंधित पानी से भीगने पर गुस्सा नहीं हुआ। वह सोचने लगा—'जो लड़की ऐसे सुगंधित पानी से नहाती हो, वह जरूर सुंदर होगी।'

फिर शहजादा महल में वापस आ गया। उसने अपनी मां से कहा—"मस्जिद के पास वाली गली के मोड़ पर एक मकान है। उसमें एक सुंदर लड़की रहती है। मैं उससे ही विवाह करना चाहता हूं।" रानी यह सुन बहुत हंसी। उसने कहा—"बेटे, जो मकान तुम बता रहे हो, उसमें तो दो बूढ़ी बहनें रहती हैं।" शहजादे ने कहा—"आप वहां जाकर पता करें। वहां एक बहुत सुंदर लड़की रहती है। मैं उससे ही शादी करूंगा।"

अगले दिन रानी उस मकान में पहुंची। उसने देखा कि एक बुढ़िया वहां अकेली बैठी है। वह बड़ी बहन थी।

रानी ने पूछा—"तुम्हारी बहन कहां है ?" यह सुन बड़ी बहन ने कहा—"उसकी शादी होने तक उसे कोई नहीं देख सकता।"

"क्या उसकी एक अंगुली भी नहीं ?"—रानी से पूछा

बुढ़िया ने आवाज दी—"बहन, रानी के लिए अपनी एक अंगुली तो बाहर निकाल दो।" छोटी बहन कपड़ों की अलमारी में छिपी हुई थी। एक मोमबत्ती दरवाजे को तिरछा खोलकर बाहर निकाली। रानी ने छोटी बहन की अंगुली देख ली।

रानी ने सोचा—'लड़की की अंगुलियां नाजुक और चमेली के फूल की तरह सफेद व सुंदर हैं।' वह अपने लड़के के साथ उसका विवाह करने के लिए तैयार हो गई। शादी की तैयारियां धूमधाम से होने लगीं।

कुछ दिन बाद शहजादे का विवाह हो गया। दुलहन राजमहल में आ गई। शहजादा दुलहन से मिलने गया। उसने दुलहन के चेहरे से घूंघट उठाया पर वहां बुढ़िया को देखकर हक्का-बक्का रह गया।

"मेरी दुलहन कहां है ?"—शहज़ादे ने क्रोध से पूछा। यह सुन बूढ़ी दुलहन ने लाज से मुंह झुका लिया।

शहजादा बहुत क्रोधित हुआ। उसने बुढ़िया को महल से धक्का दे दिया। वह बाग में जा गिरी।

बाग में जिनों का राजा रहता था। उसके लड़के के गले में भयंकर रोग था। वह रोग के कारण बोल नहीं सकता था। उसने बुढ़िया को नीचे गिरते देखा। यह देख, उसने अपनी हंसी रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन उसकी हंसी नहीं रुकी। वह पेट पकड़कर

हंसता रहा । इससे उसके गले के घाव में जो पीप थी, वह बाहर निकल गई । अब उसका गला ठीक हो गया ।

जिन के लड़के की सात बहनें थीं । उसने बहनों से कहा—"इस बुढ़िया के कारण ही मेरा गला ठीक हुआ है । इसलिए इसे तुरंत इनाम देना चाहिए।"

"ईश्वर करे, इसके बाल मेरी तरह हो जाएं ।"—एक बहन ने कहा ।

"इसका चेहरा मेरी तरह सुंदर हो जाए ।"—दूसरी बहन ने कहा ।

"इसकी आंखें मेरी तरह होनी चाहिएं ।"—तीसरी बहन ने कहा ।

इसी प्रकार बाकी चारों बहनों ने भी अपनी-अपनी सुंदरता का वरदान बुढ़िया को दे दिया ।

अब बूढ़ी दुलहन की सुंदरता का मुकाबला कौन कर सकता था। उसके बाल रात की तरह काले, घने और घुटनों तक लम्बे हो गए । चेहरा चंद्रमा की भांति चमकने लगा ।

सुबह शहजादे ने महल के झरोखे से बाग में झांका । उसे वहां एक सुंदर लड़की बैठी दिखाई दी । वह बाग में गया ।

"क्या तुम मेरी पत्नी हो ?"—शहजादे ने उससे पूछा ।

—"हां।"उसने धीरे से कहा ।

अब तो शहजादे की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था । वह पत्नी को महल में ले आया ।

अगले दिन उसकी बड़ी बहन उससे मिलने आई । वह छोटी बहन को देखकर चकित रह गई ।

"क्या तुम्हीं मेरी बहन हो ?"—उसने पूछा ।

"हां, मैं ही तुम्हारी छोटी बहन हूं ।"—उसने कहा ।

"तुम इतनी सुंदर कैसे हो गई ?"—बड़ी बहन ने पूछा ।

तब उसने पूरी कहानी बता दी । बड़ी बहन बहुत खुश हुई । उसे सुखी रहने का आशीर्वाद देकर चली गई । ●
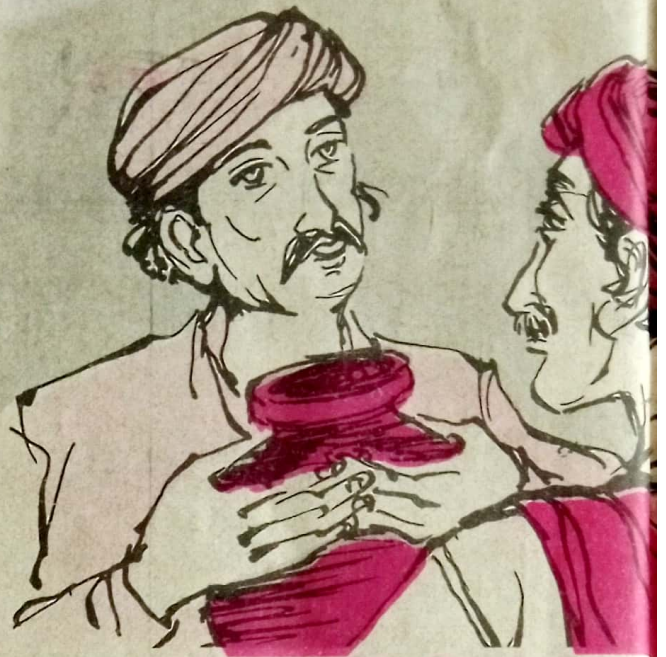


# घड़े में मोहरें

—डा. विद्या श्रीवास्तव

एक गांव में दो मित्र रहते थे। एक का नाम था—घनश्याम, दूसरे का बृजलाल । दोनों के पास थोड़ी-बहुत खेती की जमीन थी । इस जमीन पर खेती करके वे अपने परिवार का पालन-पोषण कर रहे थे ।

गांव के दूसरे लोग उनकी मित्रता को देखकर आश्चर्य करते थे । आधी रात के समय भी दोनों मित्र एक-दूसरे के काम आने के लिए तैयार रहते । उन्हें एक-दूसरे पर पूरा भरोसा था ।

एक बार बृजलाल को अपनी पत्नी और बच्चे के साथ किसी काम से ससुराल जाना था । गांव में उन दिनों चोरियां बहुत हो रही थीं, इसलिए घर में सामान छोड़ना ठीक नहीं लग रहा था । बृजलाल ने अपनी पत्नी से कहा—"क्यों जी, ऐसा न करें, अपने घर का कीमती सामान घनश्याम के घर रख दें । जब लौटेंगे, तब सामान उठा लेंगे ।"

बृजलाल की पत्नी बोली—"हां, यह ठीक रहेगा । लेकिन घर में जो दस सोने की मोहरें हैं, उनका क्या करोगे ?"

"हां, यह तो परेशानी है । मैं नहीं चाहता कि मेरा मित्र घनश्याम मेरे पास सोने की मोहरों की बात जान

ले। और फिर आजकल किसी की नीयत का भी कुछ भरोसा नहीं, जरा-सी देर में बदल सकती है।''—बृजलाल बोला।

बृजलाल की पत्नी बोली—''तो फिर हम लोग ऐसा करते हैं कि एक बड़े से घड़े में अनाज भर लेते हैं। उसी अनाज में सोने की मोहरें छिपा देंगे। किसी को कुछ पता भी नहीं चलेगा।''

पत्नी की बात सुनकर बृजलाल बड़ा खुश हुआ। बोला—''हां, यह बात तो तुम बिलकुल ठीक कहती हो। अनाज का घड़ा रखने से घनश्याम, उसकी औरत और बच्चों को सोने की मोहरों की भनक तक नहीं मिलेगी।''

दूसरे ही दिन बृजलाल को अपनी ससुराल जाना था, इसलिए एक दिन पहले ही घनश्याम के घर पर सामान रखना था। बृजलाल की पत्नी ने एक बड़े से घड़े में अनाज भरा और उसमें सोने की मोहरें छिपा दीं।

अब बृजलाल घड़े को लेकर घनश्याम के घर पहुंचा। घनश्याम को अनाज का घड़ा देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला—''अरे भाई, यह अनाज का घड़ा किसलिए? इस घड़े में कुछ और...।''

बृजलाल ने तुरंत उत्तर दिया—''इस घड़े में मैंने अनाज भर दिया है। अकेले घर में चूहों व कीड़ों के खाने का डर है, इसलिए इसे भी तुम्हारे घर पर छोड़ जाता हूं। बैलों को और घर के सामान को भी रख जाता हूं। आजकल तुम्हें मालूम ही है कि अपने गांव में भी चोरों का डर है। वैसे भी मेरे घर की तरफ नजर रखना।''

घनश्याम बोला—''अरे मित्र, क्यों चिंता करते हो? जो कुछ रखना हो, बेखटके मेरे घर रख सकते हो।'' घनश्याम बार-बार घड़े की तरफ देख रहा था। उसे कुछ अजीब बात लग रही थी। वह सोच रहा था कि बृजलाल अनाज तो अपने घर पर भी छोड़ सकता था। अनाज की चोरी का भला क्या डर!''

जब सारा सामान रखकर बृजलाल लौटने लगा, तो घनश्याम ने एक बार पूछ ही लिया—''क्यों, बृजलाल, अनाज के घड़े में कुछ और तो नहीं है?''

बृजलाल ने जवाब दिया—''अरे, और कुछ क्या होगा? पूरा घड़ा अनाज से भर दिया है, ताकि अनाज भी सुरक्षित रहे। उसमें अनाज के अलावा कुछ नहीं है।'' घनश्याम ने बृजलाल की बात पर भरोसा कर लिया।

दो-तीन दिन ही निकले होंगे। एक दिन घनश्याम की पत्नी बोली—''आज तो घर का सारा अनाज खत्म हो गया है। बाजार से जब अनाज लाओगे, तब पिसवाऊंगी। घर में जरा भी आटा नहीं है।''

घनश्याम तुरंत बोल पड़ा—''बृजलाल ने अपने घर पर जो अनाज का घड़ा रख छोड़ा है, उस घड़े में से ही कुछ अनाज निकाल लो। बाद में उस घड़े में अपनी तरफ से अनाज भर देंगे। अभी तो उसके वापस आने में कई दिन बाकी हैं।

पति की बात सुनकर घनश्याम की पत्नी ने सोचा—'हां, यह बात तो ठीक रहेगी। इधर-उधर मांगने की क्या जरूरत है? पति के मित्र के घड़े से ही थोड़ा अनाज निकाल लेते हैं, बाद में भर देंगे।'

घनश्याम की पत्नी ने ज्यों ही अनाज के घड़े से अनाज निकाला, वैसे ही अनाज के साथ सोने की दो मोहरें निकल आईं। वह बड़े आश्चर्य में पड़ गई। उसने तुरंत पति को बुलाकर कहा—''इस अनाज के घड़े में तो सोने की मोहरें निकली हैं।''

घनश्याम ने जब सोने की मोहरें देखीं, तो वह भी चकित रह गया। उसने सोचा—'हो सकता है कि इस अनाज में और भी मोहरें हों।' ऐसा विचारकर